श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र
मौजमाबाद
पूजन-आरती-चालीसा
स्तोत्र संग्रह

रचयिता : प.पू. आचार्य विशदसागरजी महाराज

कृति – **श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र मौजमाबाद**
पूजन-आरती-चालीसा स्तोत्र संग्रह

कृतिकार – **प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति**
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

संस्करण – **प्रथम-2015** प्रतियाँ -**1000**

संकलन – **मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज**

सहयोग – **क्षुल्लक श्री 105 विसौमसागरजी,**
क्षुल्लिका श्री भक्तिभारती, क्षुल्लिका श्री वात्सल्य भारती

संपादन – **ब्र. ज्योति दीदी (9829076085) , आस्था दीदी, सपना दीदी**

संयोजन – **आरती दीदी ● मो. 9829127533**

प्राप्ति स्थल – 1 जैन सरोवर समिति, निर्मलकुमार गोधा
2142, निर्मल निकुंज, रेडियो मार्केट, मनिहारों का रास्ता, जयपुर
फोन : 0141-2319907 (घर) मो.: 9414812008

2. श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र मौजमाबाद
जिला-जयपुर (राज.)

3. श्री अशोक जैन (मौजमाबाद वाले)
72/36 ए, पटेल मार्ग-मानसरोवर, जयपुर

4. विशद साहित्य केन्द्र-हरीश जैन
जय अरिहंत ट्रेडर्स, 6561 नेहरु गली, नियर लाल बत्ती चौक
गाँधी नगर, दिल्ली मो. 981815971, 9136248971

मूल्य – पुनः प्रकाशन हेतु 21/- रु. मात्र

:- अर्थ सौजन्य :-

श्री अशोक कुमार सुकुमाल जैन
सुपौत्र : अंकुर एवं दक्ष (पुत्र स्वं. श्री चिरंजीलाल बड़जात्या)
(मौजमाबाद वाले)
72/36-ए, पटेल मार्ग, मानसरोवर-जयपुर
एवं श्री दिगम्बर जैन समाज-मौजमाबाद-जयपुर (राज.)

क्षेत्र परिचय

श्री 1008 श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र मौजमाबाद
जिला-जयपुर (राज.)

राजस्थान के प्राचीन अतिशय क्षेत्रों में मौजमाबाद का महत्वपूर्ण स्थान है। यह क्षेत्र जयपुर-अजमेर के दूदू बस स्टैण्ड से 13 किमी. पूर्व की ओर लालसोट, वाया-फागी रोड़ पर स्थित है। यह संवत् 1964 (सन् 1907) में आमेर के शासक एवं बादशाह अकबर के कृपा पात्र महाराज मानसिंह के प्रधान आमात्य नानूमल गोधा द्वारा तीन शिखरों एवं दो भूमिगत भौहरें (तलघर) के निर्माण के पश्चात् यहाँ राजा मानसिंह एवं अनेक महाराजाओं, सामंत, साधु-सन्तों एवं अपार जन-समूह के मध्य नवीन वेदियों में भगवान आदिनाथ, भगवान अजितनाथ एवं दूसरे तीर्थंकर भगवंतों की विशाल प्रतिमा विराजमान करके अक्षय पुण्य अर्जन किया। इस मंदिर में दो भौहरे होने के कारण यह मंदिर भौहरें वाला मंदिर के नाम से प्रसिद्ध है। मंदिर के ऊपर जो गगनचुम्बी तीन कला पूर्ण शिखर है वे मानो दूर से जन-साधारण को अपनी ओर आमंत्रित करते हैं।

इस मंदिर में दो भूमिगत तलघर है, जिनमें तीर्थंकरों की शल्य एवं कलापूर्ण मूर्ति विराजमान है। भगवान आदिनाथ की जो विशाल पद्मासन मूर्ति है उसमें कलाकार ने मानो अपनी समस्त कला को उडेल दिया है। इस मूर्ति के दर्शन करके मन नहीं हटता मनोकामना पूर्ण होती है। छोटे तलघर में अखण्ड ज्योति जलती है। तलघरों के प्रवेश द्वार इतने छोटे है, एक आदमी को गर्दन नीचे करके जाना पड़ता है। इस विशाल मंदिर में 121 खम्बे निर्मित है तथा पाषाण एवं सर्वधातू की 225 प्रतिमायें विराजमान हैं। जिनका पूर्णतया अभिषेक होता है।

मंदिर के गुम्बज में जैन संस्कृति पर बहुत ही कलापूर्ण चित्रावली अंकित की गयी है, उसे घंटों देखने के पश्चात् भी दर्शनार्थियों का मन नहीं भरता। इस कलापूर्ण एवं विशाल मंदिर का कार्य एवं जीर्णोद्धार बराबर चलता रहता है एवं वर्तमान में भी बराबर चल रहा है।

इस भव्य एवं विशाल मंदिर को पूर्णता दिव्य रूप देने के लिए महत्वपूर्ण निर्माण कार्य की अति आवश्यकता है।

* मंदिर पर आक्रमण हुआ तब दीवार व दरवाजों पर खुदाई की प्रतिमाओं का खण्डन किया गया। तब रक्षक क्षेत्रपाल द्वारा गोले बरसाये, ऐसा इतिहास बताता है।

* बड़े तलघर मोंहरे में रात्रि को देवों का आगमन रहता है।

* नन्दीश्वर दीप वाली चंवरी में श्री 1008 पद्मप्रभु भगवान के सामने समाज के व्यक्ति द्वारा पूजन करते समय वहाँ पर स्थापना करते वक्त ठोना वहाँ से खिसकता था, यह भी अद्भुत चमत्कार था।

* कुछ समय पहले मन्दिरजी की छत्री से 10-15 दिन तक पानी की बूँदे गिरती रही अद्भुत चमत्कार रहा।

मंदिर में दीवार पर कलापूर्ण चित्रावली-

मंदिर की मूलवेदी श्री अजितनाथ भगवान के सामने मन्दिर के बाहर मनोज्ञ 41 फुट ऊँचा मानस्तम्भ बना हुआ है। देखते ही मन के उद्गार प्रफुल्लित हो जाते हैं। इसमें मार्बल एवं रेलिंग कार्य सम्पूर्ण हो गया है। पूजन दर्शन करने से मन को शांति मिलती है।

मौजमाबाद में एक छोटा काँच मंदिर व नसियाँ भी है, छोटे मंदिर में समोशरण में विराजमान श्री 1008 श्री नेमीनाथ भगवान की मूर्ति आकर्षक व दर्शनीय है। इस मंदिरजी में भी तलघर (भौहरा) है। इस क्षेत्र पर क्षुल्लक 105 श्री सिद्धसागरजी महाराज का समाधिमरण हुआ था जिनकी चरण-छतरी नसियाँ पर बनी हुई है एवं एक छतरी श्री भट्टारकजी की भी है।

अतः सभी धर्मप्रेमी बन्धुओं से निवेदन है कि एक बार इस क्षेत्र पर अवश्य पधारें। तन-मन-धन से सहयोग देकर पुण्यार्जन करें।

संवत् 1661 में मौजमाबाद में आमेर के राजा मानसिंह के मंत्री महामात्य नानू गोधा द्वारा तीन शिखरों के एक विशाल मंदिर का निर्माण कराया जिसकी पंचकल्याणक प्रतिष्ठा संवत् 1664 (सन् 1607) में ज्येष्ठ कृष्णा तृतीया को सम्पन्न हुई। यह प्रतिष्ठा विशाल स्तर पर हुई तथा उसमें हजारों जिन प्रतिमायें प्रतिष्ठित हुई थीं। राजस्थान के ही नहीं देश के अधिकांश मन्दिरों में इस प्रतिष्ठा में प्रतिष्ठित मूर्तियाँ विराजमान हैं। नानू गोधा ने पूर्वजों ने ही संवत् 1470 में टोंक में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा करायी थी जिसमें प्रतिष्ठित प्रतिमायें टोंक में उत्खनन में प्राप्त हुई है। नानू गोधा जो मौजमाबाद के ही निवासी थे अपने जीवन में 84 मन्दिर चैत्यालय स्थापित किये जिनमें 80 चैत्यालय तो अकेले बंगाल में थे। मौजमाबाद में वक्त के साथ मंदिर के विकास में बढ़ोतरी होती गई। सन् 2002 में मंदिरजी के सामने मानस्तम्भ का निर्माण करवाकर पंचकल्याणक करवाया गया।

प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागरजी के परम शिष्य **आचार्य श्री 108 विशदसागरजी** महाराज 2014 के तिजारा चातुर्मास के पश्चात् श्री महावीरजी, पद्मपुरा, मालपुरा, डिग्गी, फागी के पश्चात् जब मौजमाबाद पहुँचे। मौजमाबाद के विशाल जिनालय की भव्य प्रतिमाओं के दर्शन कर गद्गद् हो गए और यहीं प्रभु की भक्ति में रत होकर पूजन-आरती-चालीसा-स्तोत्र आदि द्वारा हृदय के उद्गार प्रकट किए। संघस्थ मुनि श्री विशालसागर जी ने अपने गुरुवर के हृदय के उद्गारों का प्रस्तुत पुस्तक में संलग्न कर भक्तों को प्रभु भक्ति से जुड़ने का स्रोत प्रदान किया। इस महान उपकार के लिए गुरुवर श्री विशदसागर जी के चरणों में बारम्बार नमोस्तु-3।

प्रबन्धकार्यकारिणी : अध्यक्ष-**अशोक बोहरा** (0921495332), कोषाध्यक्ष : **रूपचन्द मोदी** (09460501978), मंत्री-**अशोक चौधरी** (09636889616)

मंगलाष्टक (हिन्दी)

पूजनीय इन्द्रों से अर्हत्, सिद्ध क्षेत्र सिद्धी स्वामी।
जिन शासन को उन्नत करते, सूरी मुक्ती पथगामी।।
उपाध्याय हैं ज्ञान प्रदायक, साधू रत्नत्रय धारी।
परमेष्ठी प्रतिदिन पापों के, नाशक हों मंगलकारी।।1।।

नमित सुरासुर के मुकुटों की, मणिमय कांती शुभ्र महान्।
प्रवचन सागर की वृद्धी को, प्रभु पद नख हैं चंद्र समान।।
योगी जिनकी स्तुति करते, गुण के सागर अनगारी।
परमेष्ठी प्रतिदिन पापों के, नाशक हों मंगलकारी।।2।।

सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण युत, निर्मल रत्नत्रय धारी।
मोक्ष नगर के स्वामी श्री जिन, मोक्ष प्रदाता उपकारी।।
जिन आगम जिन चैत्य हमारे, जिन चैत्यालय सुखकारी।
धर्म चतुर्विध पंच पाप के, नाशक हों मंगलकारी।।3।।

तीन लोक में ख्यात हुए हैं, ऋषभादिक चौबिस जिनदेव।
श्रीयुत द्वादश चक्रवर्ति हैं, नारायण नव हैं बलदेव।।
प्रति नारायण सहित तिरेसठ, महापुरुष महिमाधारी।
पुरुष शलाका पंच पाप के, नाशक हों मंगलकारी।।4।।

जया आदि हैं अष्ट देवियाँ, सोलह विद्यादिक हैं देव।
श्रीयुत तीर्थंकर की माता-पिता, यक्ष-यक्षी भी एव।।
देवों के स्वामी बत्तिस वसु, दिक् कन्याएँ मनहारी।
दश दिक्पाल सहित विघ्नों के, नाशक हों मंगलकारी।।5।।

सुतप वृद्धि करके सर्वौषधि, ऋद्धी पाई पञ्च प्रकार।
वसु विधि महा निमित् के ज्ञाता, वसुविधि चारण ऋद्धीधार।।

पंच ज्ञान तिय बल भी पाये, बुद्धि सप्त ऋद्धीधारी।
ये सब गण नायक पापों के, नाशक हों मंगलकारी।।6।।

आदिनाथ स्वामी अष्टापद, वासुपूज्य चंपापुर जी।
नेमिनाथ गिरनार गिरि से, महावीर पावापुर जी।।
बीस जिनेश सम्मेदशिखर से, मोक्ष विभव अतिशयकारी।
सिद्ध क्षेत्र पांचों पापों के, नाशक हों मंगलकारी।।7।।

व्यंतर भवन विमान ज्योतिषी, मेरु कुलाचल इष्वाकार।
जंबू शाल्मलि चैत्य वृक्ष की, शाखा नंदीश्वर वक्षार।।
रूप्यादि कुण्डल मनुजोत्तर, में जिनगृह अतिशयकारी।
वे सब ही पांचों पापों के, नाशक हों मंगलकारी।।8।।

तीर्थंकर जिन भगवंतों को, गर्भ जन्म के उत्सव में।
दीक्षा केवलज्ञान विभव अरु, मोक्ष प्रवेश महोत्सव में।।
कल्याणक को प्राप्त हुए तब, देव किए अतिशय भारी।
कल्याणक पांचों पापों के, नाशक हों मंगलकारी।।9।।

धन वैभव सौभाग्य प्रदायक, जिन मंगल अष्टक धारा।
सुप्रभात कल्याण महोत्सव, में सुनते-पढ़ते न्यारा।।
धर्म अर्थ अरु काम समन्वित, लक्ष्मी हो आश्रयकारी।
मोक्ष लक्ष्मी 'विशद' प्राप्त कर, होते हैं मंगलकारी।।10।।

।। इति मंगलाष्टकम् ।।

गुरु भक्ति

धर्म प्रभावक परम पूज्य हे !, तव चरणों में करूँ नमन्।
बुद्धि विकाशक प्रबल आपको, करते हम सादर वन्दन।।
परम शान्ति देने वाले हे !, गुरुवर करते हम अर्चन।
विशद सिन्धु गुण के आर्णव को, करते हम शत्-शत् वन्दन।।

श्री सकलकीर्ति कृत पंचामृत अभिषेक पाठ

जिनबिम्ब स्थापन

पाण्डुक शिला पे इन्द्र स्वर्ग के, जिनवर का अभिषेक महान।
भक्ति भाव से करते आके, हर्षित हो करते गुणगान।।
पाण्डुक शिला पे आज भाव से, जिनवर का करने अर्चन।
'विशद' भाव से जिनबिम्बों का, करते हैं हम स्थापन।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं ह्रं श्री वर्णे जिनबिम्ब स्थापनं करोमि।

अर्घ- नीर गंधाक्षत लेकर फूल, चरु ले दीप धूप फल मूल।
चढ़ाने लाए हैं ये अर्घ्य, 'विशद' हम पाएँ सुपद अनर्घ्य।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री वर्णे जिनबिम्ब स्थापनं करोमि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुःकलश स्थापन

केवल ज्ञानी अर्हन्तों के, चरणों में करते वन्दन।
पावन तीर्थ बारि भर लाए, करने श्री जिन का अर्चन।।
स्वस्तिक की रचना कर अनुपम, कलश सजाते हैं पावन।
भद्र पीठ के चतुष्कोंण में, करते हैं हम स्थापन।।2।।

ॐ ह्रीं स्वस्त्ये चतुःकोणेषु चतुःकलश स्थापनं करोमि।

शुद्ध जल से अभिषेक करें

मेघ व सरिता आदि तीर्थ से, जो उत्पन्न हुआ शुभ नीर।
श्री जिनेन्द्र के मुख से प्रगटित, जिनवाणी है अति गंभीर।।
गणधर चार ज्ञान के धारी, जिनवर गाये मंगलकार।
करते हैं अभिषेक भाव से, देते हैं हम पावन जलधार।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐ अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं ईवीं ईवीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन जिनभिषेचयामि स्वाहा।

अर्घ- नीर गंधाक्षत लेकर फूल, चरु ले दीप धूप फल मूल।
चढ़ाने लाए हैं ये अर्घ्य, 'विशद' हम पाएँ सुपद अनर्घ्य।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं जलेन जिनाभिसिञ्चयामि करोमि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इक्षुरस स्नपनम्

ताजा गन्ने का रस ले व, शर्करादि रस ले शुभकार।
जगत पूज्य जिन गणधरादि पद, देते हैं हम पावन धार।।
हर्षित होकर विशद भाव से, करते हैं जिनका अर्चन।
भक्ति भाव से जिन चरणाम्बुज, को करते शत्-शत् वंदन।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभादिमहावीरपर्यन्त इक्षुरसेन अभिसिञ्चयामि स्वाहा।

अर्घ- नीर गंधाक्षत लेकर फूल, चरु ले दीप धूप फल मूल।
चढ़ाने लाए हैं ये अर्घ्य, 'विशद' हम पाएँ सुपद अनर्घ्य।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं इक्षुरसेन जिनाभिसिञ्चयामि करोमि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नारिकेल रस स्नपनम्

नारिकेल का स्वच्छ नीर ले, करते न्हवन यहाँ शुभकार।
जगत् पूज्य जिनवर के चरणों, वंदन करते बारम्बार।।
हर्षित होकर विशद भाव से, करते हैं जिनका अर्चन।
भक्ति भाव से जिन चरणाम्बुज, को करते शत्-शत् वंदन।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभादिमहावीरपर्यन्त नारिकेलरसेन अभिसिञ्चयामि स्वाहा।

अर्घ- नीर गंधाक्षत लेकर फूल, चरु ले दीप धूप फल मूल।
चढ़ाने लाए हैं ये अर्घ्य, 'विशद' हम पाएँ सुपद अनर्घ्य।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं नारिकेलरसेन जिनाभिसिञ्चयामि करोमि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फलरस स्नपनम्

पके हुए फल का रस पावन, भरा कलश में अपरम्पार।
श्री जिनेन्द्र के शीश पे धारा, देते जिससे मंगलकार।।
हर्षित होकर विशद भाव से, करते हैं जिनका अर्चन।
भक्ति भाव से जिन चरणाम्बुज, को करते शत्-शत् वंदन।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभादिमहावीरपर्यन्त रसाभिषेकं अभिसिञ्चयामि स्वाहा।

अर्घ– नीर गंधाक्षत लेकर फूल, चरु ले दीप धूप फल मूल।
चढ़ाने लाए हैं ये अर्घ्य, 'विशद' हम पाएँ सुपद अनर्घ्य।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं रसाभिषेकं जिनाभिसिञ्चयामि करोमि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आम्र रसाभिषेक स्नपनम्

पके आम के रस से करते, श्री जिनेन्द्र का हम अभिषेक।
विशद भावना भाते हैं प्रभु, जागे मेरे हृदय विवेक।।
हर्षित होकर विशद भाव से, करते हैं जिनका अर्चन।
भक्ति भाव से जिन चरणाम्बुज, को करते शत्–शत् वंदन।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभादिमहावीरपर्यन्त आम्रफलरसेन अभिसिञ्चयामि स्वाहा।

अर्घ– नीर गंधाक्षत लेकर फूल, चरु ले दीप धूप फल मूल।
चढ़ाने लाए हैं ये अर्घ्य, 'विशद' हम पाएँ सुपद अनर्घ्य।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं आम्रफलरसेन जिनाभिसिञ्चयामि करोमि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत स्नपनम्

तुरत तपाए स्वर्णाभायुत, घृत को लेकर देते धार।
जगत पूज्य जिन गणधरादि पद, विशद भाव से मंगलकार।।
हर्षित होकर विशद भाव से, करते हैं जिनका अर्चन।
भक्ति भाव से जिन चरणाम्बुज, को करते शत्–शत् वंदन।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभादिमहावीरपर्यन्त घृतेन अभिसिञ्चयामि स्वाहा।

अर्घ– नीर गंधाक्षत लेकर फूल, चरु ले दीप धूप फल मूल।
चढ़ाने लाए हैं ये अर्घ्य, 'विशद' हम पाएँ सुपद अनर्घ्य।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री घृतेन जिनाभिसिञ्चयामि करोमि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दुग्ध स्नपनम्

शुक्ल ध्यान समश्रेष्ठ मनोहर, दुग्ध की हम देते हैं धार।
जगत् पूज्य जिन गणधरादि पद, देते हैं हम मंगलकार।।

हर्षित होकर विशद भाव से, करते हैं जिनका अर्चन।
भक्ति भाव से जिन चरणाम्बुज, को करते शत्–शत् वंदन।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभादिमहावीरपर्यन्त दुग्धेन अभिसिञ्चयामि स्वाहा।

अर्घ– नीर गंधाक्षत लेकर फूल, चरु ले दीप धूप फल मूल।
चढ़ाने लाए हैं ये अर्घ्य, 'विशद' हम पाएँ सुपद अनर्घ्य।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री दुग्धेन जिनाभिसिञ्चयामि करोमि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दधि स्नपनम्

पुण्य सुफल या बर्फ के सदृश, दधि लेकर पावन शुभकार।
जगत पूज्य जिन गणधरादि पद, देते हैं हम पावन धार।।
हर्षित होकर विशद भाव से, करते हैं जिनका अर्चन।
भक्ति भाव से जिन चरणाम्बुज, को करते शत्–शत् वंदन।।10।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभादिमहावीरपर्यन्त दध्यामिसिञ्चयामि स्वाहा।

अर्घ– नीर गंधाक्षत लेकर फूल, चरु ले दीप धूप फल मूल।
चढ़ाने लाए हैं ये अर्घ्य, 'विशद' हम पाएँ सुपद अनर्घ्य।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री दध्यामि जिनाभिसिञ्चयामि करोमि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वौषधि स्नपनम्

चन्दनादि केशर लवंग शुभ, ऐला और कपूर मिलाय।
सुरभित और सुगन्धित लेकर, सर्वौषधि का कलश भराय।।
हर्षित होकर विशद भाव से, करते हैं जिन का अर्चन।
भक्ति भाव से जिन चरणाम्बुज, को करते शत्–शत् वंदन।।11।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभादिमहावीरपर्यन्त सर्वौषध्यामिसिञ्चयामि स्वाहा।

अर्घ– नीर गंधाक्षत लेकर फूल, चरु ले दीप धूप फल मूल।
चढ़ाने लाए हैं ये अर्घ्य, 'विशद' हम पाएँ सुपद अनर्घ्य।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री सर्वौषध्यामि जिनाभिसिञ्चयामि करोमि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुष्कोण कलश स्नपनस्य

चार कलश स्वर्णाभा वाले, भरे तीर्थ जल से शुभकार।
जगत पूज्य जिन गणधरादि पद, देते हैं हम पावन धार।।
हर्षित होकर विशद भाव से, करते हैं जिन का अर्चन।
भक्ति भाव से जिन चरणाम्बुज, को करते शत्–शत् वंदन।।12।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐम् अर्हं चतुःकोणेषु चतुःकलशै स्नापयामिति स्वाहा।

अर्घ– नीर गंधाक्षत लेकर फूल, चरु ले दीप धूप फल मूल।
चढ़ाने लाए हैं ये अर्घ्य, 'विशद' हम पाएँ सुपद अनर्घ्य।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री जिनाग्रे चतुःकलशाभिषेकं करोमि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन विलेपनस्य

परम विशुद्ध कर्पूर सुमिश्रित, करते चन्दन का लेपन।
जिनवर कहे सुरासुर पूजित, प्रभु का हम करते अर्चन।।
हर्षित होकर विशद भाव से, करते हैं जिन का अर्चन।
भक्ति भाव से जिन चरणाम्बुज, को करते शत्–शत् वंदन।।13।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री जिनबिम्बोपरि चन्दन विलेपनं करोमि स्वाहा।

अर्घ– नीर गंधाक्षत लेकर फूल, चरु ले दीप धूप फल मूल।
चढ़ाने लाए हैं ये अर्घ्य, 'विशद' हम पाएँ सुपद अनर्घ्य।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री जिनाग्रे चन्दन विलेपनं करोमि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प वृष्टि

सुरभित पुष्प सुगन्धित अनुपम, विविध भाँति ले अपरम्पार।
पुष्प वृष्टि हम करते पावन, जिन प्रतिमा पर मंगलकार।।
हर्षित होकर विशद भाव से, करते हैं जिन का अर्चन।
भक्ति भाव से जिन चरणाम्बुज, को करते शत्–शत् वंदन।।14।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री जिनबिम्बोपरि पुष्पवृष्टिं करोमि।

मंगल आरति

दध्याक्षत मनहर पुष्पों युत, दीप जलाकर मंगलकार।
आरती अवतारित करते हैं, कामदाह नाशी शुभकार।।
हर्षित होकर विशद भाव से, करते हैं जिन का अर्चन।
भक्ति भाव से जिन चरणाम्बुज, को करते शत्–शत् वंदन।।15।।

ॐ ह्रीं मंगल आरती अवतारयामि।

सुगन्धित जल–स्नपनस्य

दिव्य द्रव्य के मिश्रण से जल, हुआ सुगन्धित मंगलकार।
जगत् पूज्य जिन गणधरादि पद, देते हैं हम पावन धार।।
हर्षित होकर विशद भाव से, करते हैं जिनका अर्चन।
भक्ति भाव से जिन चरणाम्बुज, को करते शत्–शत् वंदन।।16।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं सुगन्धित जलेन स्नापयामिति स्वाहा।

अर्घ– नीर गंधाक्षत लेकर फूल, चरु ले दीप धूप फल मूल।
चढ़ाने लाए हैं ये अर्घ्य, 'विशद' हम पाएँ सुपद अनर्घ्य।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री सुगंधित कलशाभिषेकं करोमि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अभिषेक का फल

न्हवन कराते नीरादिक से, जिन गणधर के पद अर्चन।
विश्व विभव को पाके क्रमशः, वह भी बन जाते भगवन।।
हर्षित होकर विशद भाव से, करते हैं जिनका अर्चन।
भक्ति भाव से जिन चरणाम्बुज, को करते शत्–शत् वंदन।।17।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

अथ वृहद् शान्तिधारा

ॐ नमः सिद्धेभ्यः श्री वीतरागाय नमः

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते प्रक्षीणाशेषदोषकलमषाय दिव्यतेजोमूर्तये नमः श्री शांतिनाथाय शांतिकराय सर्वपापप्रणाशनाय सर्वविघ्नविनाशनाय सर्वरोगोपसर्गविनाशनाय सर्वपरकृतक्षुद्रोपद्रव-विनाशनाय, सर्वक्षामडामरविनाशनाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः मम (...) **सर्वज्ञानावरण कर्म** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वदर्शनावरण कर्म** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्ववेदनीय कर्म** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वमोहनीय कर्म** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वायुःकर्म** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वनामकर्म** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वगोत्रकर्म** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वान्तरायकर्म** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वक्रोधं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वमानं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वमायां** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वलोभं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वमोहं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वरागं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वद्वेषं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वगजभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वसिंहभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वाग्निभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वसर्पभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वयुद्धभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वसागरनदीजलभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वजलोदरभगंदरकुष्ठकामलादिभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वनिगडादिबंधनभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्ववायुयानदुर्घटनाभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्ववाष्पयानदुर्घटनाभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वचतुश्चक्रिकादुर्घटनाभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वत्रिचक्रिकादुर्घटनाभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वद्विचक्रिकादुर्घटनाभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्ववाष्पधानीविस्फोटकभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वविषाक्तवाष्पक्षरणभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वविद्युतदुर्घटनाभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वभूकम्पदुर्घटनाभयं**

छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वभूतपिशाचव्यंतर-डाकिनीशाकिन्यादिभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वधनहानिभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वव्यापारहानिभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वराजभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वचौरभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वदुष्टभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वशत्रुभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वशोकभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वसाम्प्रदायिकविद्वेषं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्ववैरं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वदुर्भिक्षं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वमनोव्याधि** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वआर्तरौद्रध्यान** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वदुर्भाग्यं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वायशः** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वपापं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्व अविद्यां** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वप्रत्यवायं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वकुमतिं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वक्रूरग्रहभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वदुःखं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वापमृत्युं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि।

ॐ त्रिभुवनशिखरशेखर-शिखामणि-त्रिभुवनगुरुत्रिभुवनजनता अभयदानदायकसार्वभौम-धर्मसाम्राज्यनायकमहति-महावीरसन्मति-वीरातिवीर वर्धमाननामालंकृत श्री महावीरजिनशासनप्रभावात् सर्वे जिनभक्ताः सुखिनो भवंतु।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं आद्यानामाद्ये जम्बूद्वीपे मेरोर्दक्षिणे भागे भरतक्षेत्रे भरतक्षेत्रे आर्यखंडे भारतदेशे.... प्रदेशे.... नामनगरे वीरसंवत्.... तमे.... मासे.... पक्षे... तिथौ... वासरे नित्य पूजावसरे (..... विधानावसरे) विधीयमाना इयं शान्तिधारा सर्वदेशे राज्ये राष्ट्रे पुरे ग्रामे नगरे सर्वमुनिआर्यिका-श्रावकश्राविकाणां चतुर्विधसंघस्थ मम च शांतिं करोतु मंगलं तनोतु इति स्वाहा।

हे षोडश तीर्थंकर ! पंचमचक्रवर्तिन् ! कामदेवरूप ! श्री शांतिजिनेश्वर ! **सुभिक्षं** कुरू कुरू **मनः समाधिं** कुरू कुरू **धर्मशुक्लध्यानं** कुरू कुरू **सुयशः** कुरू कुरू **सौभाग्यं** कुरू कुरू **अभिमतं** कुरू कुरू **पुण्यं** कुरू कुरू

विद्यां कुरू कुरू **आरोग्यं** कुरू कुरू **श्रेयः** कुरू कुरू **सौहार्दं** कुरू कुरू **सर्वारिष्ट ग्रहादीनं** अनुकूलय अनुकूलय **कदलीघातमरणं** घातय घातय **आयुर्द्रांघय** द्राघय। **सौख्यं** साधय साधय, ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथाय जगत् शांतिकराय सर्वोपद्रव–शांति कुरू कुरू ह्रीं नमः। परमपवित्रसुगंधितजलेन जिनप्रतिमायाः मस्तकस्योपरि शांतिधारां करोमीति स्वाहा। चतुर्विधसंघस्थ मम च सर्वशांतिं कुरू कुरू तुष्टिं कुरू कुरू पुष्टिं कुरू कुरू वषट् स्वाहा।

शांति शिरोधृत जिनेश्वर शासनानां।
शांति निरन्तर तपोभव भावितानां।।
शांतिः कषाय जय जृम्भित वैभवानां।
शांतिः स्वभाव महिमान मुपागतानां।।

संपूजकानां प्रतिपालकानां यतीन्द्र सामान्य तपोधनानां।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः करोतु शांतिं भगवान जिनेन्द्रः।।

❋❋❋

अज्ञान महातम के कारण, हम व्यर्थ कर्म कर लेते हैं।
अब अष्ट कर्म के नाश हेतू, प्रभु शांति धारा देते हैं।।

(अर्घ)

शांतीधारा करके हे प्रभु, अर्घ्य चढ़ाते मंगलकार।
'विशद' शांति को पाने हेतू, वन्दन करते बारम्बार।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं त्रिभुवनपते शान्तिधारां करोमि नमोऽर्हते स्वाहा।

आचार्य 108 श्री विशदसागरजी महाराज का अर्घ्य

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर ले मन में भाव बनाये हैं।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु चरणों में सिर धरते हैं।।

ॐ हूँ क्षमामूर्ति आचार्य 108 श्री विशदसागरजी यतिवरेभ्योः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनाभिषेक समय की आरती

(तर्ज–सुरपति ले अपने...)

जिन प्रतिमा को धर शीश, चले नर ईश, सहित परिवारा।
जिन शीश पे देने धारा..... ।। टेक।।
जिनवर अनन्त गुण धारी हैं, जो पूर्ण रूप अविकारी हैं।
जिनके चरणों में झुकता है जग सारा– जिन शीश... ।।1।।
जिनगृह सुर भवनों में सोहें, स्वर्गों में भी मन को मोहें।
शत इन्द्र वहाँ जाके बोलें जयकारा–जिन शीश... ।।2।।
गिरि तरुवर पर जिनगृह मानो, जिनबिम्ब श्रेष्ठ जिनमें मानो।
जो अकृत्रिम हैं ना निर्मित किसी के द्वारा–जिन शीश... ।।3।।
जिन शीश पे धारा करते हैं, वे अपने पातक हरते हैं।
जिन भक्ती बिन यह है संसार असारा–जिन शीश... ।।4।।
जिन शीश पे जो जल जाता है, वह गंधोदक बन जाता है।
जो रोगादिक से दिलवाए छुटकारा–जिन शीश... ।।5।।
गंधोदक शीश चढ़ाते हैं, वे निश्चय शुभ फल पाते हैं।
मैना सुन्दरि ने पति का कुष्ट निवारा–जिन शीश... ।।6।।
जिन मंदिर जो नर जाते हैं, वे विशद शांति सुख पाते हैं।
उनके जीवन का चमके 'विशद' सितारा –जिन शीश... ।।7।।
जो पावन दीप जलाते हैं, अरु भाव से आरति गाते हैं।
उन जीवों का इस भव से हो निस्तारा–जिन शीश... ।।8।।

आचार्योपाध्याय–सर्वसाधु का अर्घ्य

रत्नत्रय के धारी पावन, शिवपथ के राही अनगार।
विषयाशा के त्यागी साधू, तीन लोक में मंगलकार।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, करते हम जिनका अर्चन।
'विशद' भाव से चरण कमल में, भाव सहित करते वन्दन।।

ॐ ह्रीं निर्ग्रन्थाचार्य उपाध्याय सर्व साधुभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विनय पाठ

(दोहा)

पूजा विधि के आदि में, विनय भाव के साथ।
श्री जिनेन्द्र के पद युगल, झुका रहे हम माथ।।
कर्मघातिया नाशकर, पाया केवलज्ञान।
अनन्त चतुष्टय के धनी, जग में हुए महान् ।।
दुखहारी त्रयलोक में, सुखकर हैं भगवान।
सुर-नर-किन्नर देव तव, करें विशद गुणगान।।
अघहारी इस लोक में, तारण तरण जहाज।
निज गुण पाने के लिए, आए तव पद आज।।
समवशरण में शोभते, अखिल विश्व के ईश।
ॐकारमय देशना, देते जिन आधीश।।
निर्मल भावों से प्रभू, आए तुम्हारे पास।
अष्टकर्म का नाश हो, होवे ज्ञान प्रकाश।।
भवि जीवों को आप ही, करते भव से पार।
शिव नगरी के नाथ तुम, विशद मोक्ष के द्वार।।
करके तव पद अर्चना, विघ्न रोग हों नाश।
जन-जन से मैत्री बढ़े, होवे धर्म प्रकाश।।
इन्द्र चक्रवर्ती तथा, खगधर काम कुमार।
अर्हत् पदवी प्राप्त कर, बनते शिव भरतार।।
निराधार आधार तुम, अशरण शरण महान्।
भक्त मानकर हे प्रभू ! करते स्वयं समान।।
अन्य देव भाते नहीं, तुम्हें छोड़ जिनदेव ।
जब तक मम जीवन रहे, ध्याऊँ तुम्हें सदैव ।।

परमेष्ठी की वन्दना, तीनों योग सम्हाल।
जैनागम जिनधर्म को, पूजें तीनों काल।।
जिन चैत्यालय चैत्य शुभ, ध्यायें मुक्ती धाम।
चौबीसों जिनराज को, करते 'विशद' प्रणाम।।

मंगल पाठ

परमेष्ठी त्रय लोक में, मंगलमयी महान।
हरें अमंगल विश्व का, क्षण भर में भगवान।।1।।
मंगलमय अरहंतजी, मंगलमय जिन सिद्ध।
मंगलमय मंगल परम, तीनों लोक प्रसिद्ध।।2।।
मंगलमय आचार्य हैं, मंगल गुरु उवज्झाय।
सर्व साधु मंगल परम, पूजें योग लगाय।।3।।
मंगल जैनागम रहा, मंगलमय जिन धर्म।
मंगलमय जिन चैत्य शुभ, हरें जीव के कर्म।।4।।
मंगल चैत्यालय परम, पूज्य रहे नवदेव।
श्रेष्ठ अनादिनन्त शुभ, पद यह रहे सदैव।।5।।
इनकी अर्चा वन्दना, जग में मंगलकार।
समृद्धी सौभाग्य मय, भव दधि तारण हार।।6।।
मंगलमय जिन तीर्थ हैं, सिद्ध क्षेत्र निर्वाण।
रत्नत्रय मंगल कहा, वीतराग विज्ञान।।7।।

अथ् अर्हत पूजा प्रतिज्ञायां... *।। पुष्पांजलि क्षिपामि ।।*

(यहाँ पर नौ बार णमोकार मंत्र जपना एवं पूजन की प्रतिज्ञा करनी चाहिए।)(जो शरीर पर वस्त्र एवं आभूषण हैं या जो भी परिग्रह है, इसके अलावा परिग्रह का त्याग एवं मंदिर से बाहर जाने का त्याग जब तक पूजन करेंगे तब तक के लिए करें।)

इत्याशीर्वाद :

पूजा पीठिका

(हिन्दी भाषा)

ॐ जय जय जय नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।।1।।

अरहन्तों को नमन् हमारा, सिद्धों को करते वन्दन।
आचार्यों को नमस्कार हो, उपाध्याय का है अर्चन।।
सर्वलोक के सर्व साधुओं, के चरणों शत्शत् वन्दन।
पञ्च परम परमेष्ठी के पद, मेरा बारम्बार नमन्।।

ॐ ह्रीं अनादि मूलमंत्रेभ्यो नमः। (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

मंगल चार-चार हैं उत्तम, चार शरण हैं जगत् प्रसिद्ध।
इनको प्राप्त करें जो जग में, वह बन जाते प्राणी सिद्ध।।
श्री अरहंत जगत् में मंगल, सिद्ध प्रभू जग में मंगल।
सर्व साधु जग में मंगल हैं, जिनवर कथित धर्म मंगल।।
श्री अरहंत लोक में उत्तम, परम सिद्ध होते उत्तम।
सर्व साधु उत्तम हैं जग में, जिनवर कथित धर्म उत्तम।।
अरहंतों की शरण को पाएँ, सिद्ध शरण में हम जाएँ ।
सर्व साधु की शरण केवली, कथित धर्म शरणा पाएँ ।।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(चाल टप्पा)

अपवित्र या हो पवित्र कोई, सुस्थित दुस्थित होवे।
पंच नमस्कार ध्याने वाला, सर्व पाप को खोवे।।
अपवित्र या हो पवित्र नर, सर्व अवस्था पावें।
बाह्याभ्तंर से शुचि हैं वह, परमातम को ध्यावें।।
अपराजित यह मंत्र कहा है, सब विघ्नों का नाशी।
सर्व मंगलों में मंगल यह, प्रथम कहा अविनाशी।।

पञ्च नमस्कारक यह अनुपम, सब पापों का नाशी।
सर्व मंगलों में मंगल यह, प्रथम कहा अविनाशी।।
परं ब्रह्म परमेष्ठी वाचक, अर्हं अक्षर माया।
बीजाक्षर है सिद्ध संघ का, जिसको शीश झुकाया।।
मोक्ष लक्ष्मी के मंदिर हैं, अष्ट कर्म के नाशी।
सम्यक्त्वादि गुण के धारी, सिद्ध नमूँ अविनाशी।।
विघ्न प्रलय हों और शाकिनी, भूत पिशाच भग जावें।
विष निर्विष हो जाते क्षण में, जिन स्तुति जो गावें।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

पंचकल्याणक का अर्घ्य

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरु ले, दीप धूप फल अर्घ्य महान्।
जिन गृह में कल्याण हेतु मैं, अर्चा करता मंगलगान।।1।।

ॐ ह्रीं भगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाणपंचकल्याणकेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच परमेष्ठी का अर्घ्य

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरु ले, दीप धूप फल अर्घ्य महान्।
जिन गृह में कल्याण हेतु मैं, अर्चा करता मंगलगान।।2।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्योर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनसहस्रनाम अर्घ्य

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरु ले, दीप धूप फल अर्घ्य महान्।
जिन गृह में कल्याण हेतु मैं, अर्चा करता मंगलगान।।3।।

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टोत्तरसहस्रनामेभ्योअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवाणी का अर्घ्य

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरू ले, दीप धूप फल अर्घ्य महान्।
जिन गृह में कल्याण हेतु मैं, अर्चा करता मंगलगान।।4।।

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्दर्शन ज्ञान चारित्राणि तत्त्वार्थ सूत्र दशाध्याय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वस्ति मंगल विधान (हिन्दी)

(शम्भू छन्द)

तीन लोक के स्वामी विद्या, स्याद्वाद के नायक हैं।
अनन्त चतुष्टय श्री के धारी, अनेकान्त प्रगटायक हैं।।
मूल संघ में सम्यक् दृष्टी, पुरुषों के जो पुण्य निधान।
भाव सहित जिनवर की पूजा, विधि सहित करते गुणगान।।1।।

जिन पुंगव त्रैलोक्य गुरू के, लिए 'विशद' होवे कल्याण।
स्वाभाविक महिमा में तिष्ठे, जिनवर का हो मंगलगान।।
केवल दर्शन ज्ञान प्रकाशी, श्री जिन होवें क्षेम निधान।
उज्ज्वल सुन्दर वैभवधारी, मंगलकारी हों भगवान।।2।।

विमल उछलते बोधामृत के, धारी जिन पावें कल्याण।
जिन स्वभाव परभाव प्रकाशक, मंगलकारी हों भगवान।।
तीनों लोकों के ज्ञाता जिन, पावें अतिशय क्षेम निधान।
तीन लोकवर्ती द्रव्यों में, विस्तृत ज्ञानी हैं भगवान।।3।।

परम भाव शुद्धी पाने का, अभिलाषी होकर मैं नाथ।
देश काल जल चन्दनादि की, शुद्धी भी रखकर के साथ।।
जिन स्तवन जिन बिम्ब का दर्शन, ध्यानादी का आलम्बन।
पाकर पूज्य अरहन्तादी की, करते हम पूजन अर्चन।।4।।

हे अर्हन्त ! पुराण पुरुष हे !, हे पुरुषोत्तम यह पावन।
सर्व जलादी द्रव्यों का शुभ, पाया हमने आलम्बन।।
अति दैदीप्यमान है निर्मल, केवल ज्ञान रूपी पावन।
अग्नी में एकाग्र चित्त हो, सर्व पुण्य का करें हवन।।5।।

ॐ ह्रीं विधियज्ञ-प्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

(दोहा छन्द)

श्री ऋषभ मंगल करें, मंगल श्री अजितेश।
श्री संभव मंगल करें, अभिनंदन तीर्थेश।।
श्री सुमति मंगल करें, मंगल श्री पद्मेश।
श्री सुपार्श्व मंगल करें, चन्द्रप्रभु तीर्थेश।
श्री सुविधि मंगल करें, शीतलनाथ जिनेश।
श्री श्रेयांस मंगल करें, वासुपूज्य तीर्थेश।।
श्री विमल मंगल करें, मंगलानन्त जिनेश।
श्री धर्म मंगल करें, शांतिनाथ तीर्थेश।।
श्री कुन्थु मंगल करें, मंगल अरह जिनेश।
श्री मल्लि मंगल करें, मुनिसुव्रत तीर्थेश।।
श्री नमि मंगल करें, मंगल नेमि जिनेश।
श्री पार्श्व मंगल करें, महावीर तीर्थेश।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(छन्द ताटंक)

महत् अचल अद्भुत अविनाशी, केवल ज्ञानी संत महान्।
शुभ दैदीप्यमान मन: पर्यय, दिव्य अवधि ज्ञानी गुणवान।।
दिव्य अवधि शुभ ज्ञान के बल से, श्रेष्ठ महाऋद्धीधारी।
ऋषी करें कल्याण हमारा, मुनिवर जो हैं अनगारी।।1।।

(यहाँ से प्रत्येक श्लोक के अन्त में पुष्पाञ्जलि क्षेपण करना चाहिये।)

जो कोष्ठस्थ श्रेष्ठ धान्योपम, एक बीज सम्भिन्न महान्।
शुभ संश्रोतृ पदानुसारिणी, चउ विधि बुद्धी ऋद्धीवान।।

शक्ती तप से अर्जित करते, श्रेष्ठ महा ऋद्धी धारी।
ऋषी करें कल्याण हमारा, मुनिवर जो हैं अनगारी।।2।।

श्रेष्ठ दिव्य मतिज्ञान के बल से, दूर से ही हो स्पर्शन।
श्रवण और आस्वादन अनुपम, गंध ग्रहण हो अवलोकन।।
पंचेन्द्रिय के विषय ग्राही, श्रेष्ठ महा ऋद्धीधारी।
ऋषी करें कल्याण हमारा, मुनिवर जो हैं अनगारी।।3।।

प्रज्ञा श्रमण प्रत्येक बुद्ध शुभ, अभिन्न दशम पूरवधारी।
चौदह पूर्व प्रवाद ऋद्धि शुभ, अष्टांग निमित्त ऋद्धीधारी।।शक्ति...।।4।।

जंघा अग्नि शिखा श्रेणी फल, जल तन्तू हों पुष्प महान्।
बीज और अंकुर पर चलते, गगन गमन करते गुणवान।।शक्ति...।।5।।

अणिमा महिमा लघिमा गरिमा, ऋद्धीधारी कुशल महान्।
मन बल वचन काय बल ऋद्धी, धारण करते जो गुणवान।।शक्ति...।।6।।

जो ईशत्व वशित्व प्राकम्पी, कामरूपिणी अन्तर्धान।
अप्रतिघाती और आसी, ऋद्धी पाते हैं गुणवान।।शक्ति...।।7।।

दीप्त तप्त अरू महा उग्र तप, घोर पराक्रम ऋद्धी घोर।
अघोर ब्रह्मचर्य ऋद्धिधारी, करते मन को भाव विभोर।।शक्ति...।।8।।

आमर्ष अरू सर्वौषधि ऋद्धी, आशीर्विष दृष्टी विषवान।
क्ष्वेलौषधि जल्लौषधि ऋद्धी, विडौषधी मल्लौषधि जान।।शक्ति...।।9।।

क्षीर और घृतस्रावी ऋद्धी, मधु अमृतस्रावी गुणवान।
अक्षीण संवास अक्षीण महानस, ऋद्धीधारी श्रेष्ठ महान्।। शक्ति...10।।

(इति परम-ऋषिस्वस्ति मंगल विधानम्)

परि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

मूलनायक सहित समुच्चय पूजन

(स्थापना)

तीर्थंकर कल्याणक धारी, तथा देव नव कहे महान्।
देव-शास्त्र-गुरु हैं उपकारी, करने वाले जग कल्याण।।
मुक्ती पाए जहाँ जिनेश्वर, पावन तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।
विद्यमान तीर्थंकर आदि, पूज्य हुए जो जगत प्रधान।।
मोक्ष मार्ग दिखलाने वाला, पावन वीतराग विज्ञान।
विशद हृदय के सिंहासन पर, करते भाव सहित आह्वान।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञान ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छंद)

जल पिया अनादि से हमने, पर प्यास बुझा न पाए हैं।
हे नाथ ! आपके चरण शरण, अब नीर चढ़ाने लाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल रही कषायों की अग्नि, हम उनसे सतत सताए हैं।
अब नील गिरि का चंदन ले, संताप नशाने आए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण शाश्वत मम अक्षय अखण्ड, वह गुण प्रगटाने आए हैं।
निज शक्ति प्रकट करने अक्षत, यह आज चढ़ाने लाए हैं।।

जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों से सुरभी पाने का, असफल प्रयास करते आए।
अब निज अनुभूति हेतु प्रभु, यह सुरभित पुष्प यहाँ लाए।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

निज गुण हैं व्यंजन सरस श्रेष्ठ, उनकी हम सुधि बिसराए हैं।
अब क्षुधा रोग हो शांत विशद, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञाता दृष्टा स्वभाव मेरा, हम भूल उसे पछताए हैं।
पर्याय दृष्टि में अटक रहे, न निज स्वरूप प्रगटाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जो गुण सिद्धों ने पाए हैं, उनकी शक्ति हम पाए हैं।
अभिव्यक्ति नहीं कर पाए, अतः भवसागर में भटकाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल उत्तम से भी उत्तम शुभ, शिवफल हे नाथ ना पाए हैं।
कर्मों कृत फल शुभ अशुभ मिला, भव सिन्धु में गोते खाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पद है अनर्घ मेरा अनुपम, अब तक यह जान न पाए हैं।
भटकाते भाव विभाव जहाँ, वह भाव बनाते आए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव 'विशद', जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- प्रासुक करके नीर यह, देने जल की धार।
लाए हैं हम भाव से, मिटे भ्रमण संसार।। शान्तये शांतिधारा..

दोहा- पुष्पों से पुष्पाञ्जली, करते हैं हम आज।
सुख-शांति सौभाग्यमय, होवे सकल समाज।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

पञ्च कल्याणक के अर्घ

तीर्थंकर पद के धनी, पाएँ गर्भ कल्याण।
अर्चा करे जो भाव से, पावे निज स्थान।।1।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महिमा जन्म कल्याण की, होती अपरम्पार।
पूजा कर सुर नर मुनी, करें आत्म उद्धार।।2।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप कल्याणक प्राप्त कर, करें साधना घोर।
कर्म काठ को नाशकर, बढ़ें मुक्ति की ओर।।3।।

ॐ ह्रीं तपकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रगटाते निज ध्यान कर, जिनवर केवलज्ञान।
स्व-पर उपकारी बनें, तीर्थंकर भगवान।।4।।

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों कर्म विनाश कर, पाते पद निर्वाण।
भव्य जीव इस लोक में, करें विशद गुणगान।।5।।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- तीर्थंकर नव देवता, तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।
देव शास्त्र गुरुदेव का, करते हम गुणगान।।

(शम्भू छन्द)

गुण अनन्त हैं तीर्थंकर के, महिमा का कोई पार नहीं।
तीन लोकवर्ति जीवों में, और ना मिलते अन्य कहीं।।
विंशति कोड़ा-कोड़ी सागर, कल्प काल का समय कहा।
उत्सर्पण अरु अवसर्पिण यह, कल्पकाल दो रूप रहा।।1।।
रहे विभाजित छह भेदों में, यहाँ कहे जो दोनों काल।
भरतैरावत द्वय क्षेत्रों में, कालचक्र यह चले त्रिकाल।।
चौथे काल में तीर्थंकर जिन, पाते हैं पाँचों कल्याण।
चौबिस तीर्थंकर होते हैं, जो पाते हैं पद निर्वाण।।2।।
वृषभनाथ से महावीर तक, वर्तमान के जिन चौबीस।
जिनकी गुण महिमा जग गाए, हम भी चरण झुकाते शीश।।
अन्य क्षेत्र सब रहे अवस्थित, हों विदेह में बीस जिनेश।
एक सौ साठ भी हो सकते हैं, चतुर्थकाल यहाँ होय विशेष।।3।।
अर्हन्तों के यश का गौरव, सारा जग यह गाता है।
सिद्ध शिला पर सिद्ध प्रभु को, अपने उर से ध्याता है।।
आचार्योपाध्याय सर्व साधु हैं, शुभ रत्नत्रय के धारी।
जैनधर्म जिन चैत्य जिनालय, जिनवाणी जग उपकारी।।4।।

प्रभु जहाँ कल्याणक पाते, वह भूमि होती पावन।
वस्तु स्वभाव धर्म रत्नत्रय, कहा लोक में मनभावन।।
गुणवानों के गुण चिंतन से, गुण का होता शीघ्र विकाश।
तीन लोक में पुण्य पताका, यश का होता शीघ्र प्रकाश।।5।।
वस्तू तत्त्व जानने वाला, भेद ज्ञान प्रगटाता है।
द्वादश अनुप्रेक्षा का चिन्तन, शुभ वैराग्य जगाता है।।
यह संसार असार बताया, इसमें कुछ भी नित्य नहीं।
शाश्वत सुख को जग में खोजा, किन्तु पाया नहीं कहीं।।6।।
पुण्य पाप का खेल निराला, जो सुख-दुःख का दाता है।
और किसी की बात कहें क्या, तन न साथ निभाता है।।
गुप्ति समिति धर्मादि का, पाना अतिशय कठिन रहा।
संवर और निर्जरा करना, जग में दुर्लभ काम कहा।।7।।
सम्यक् श्रद्धा पाना दुर्लभ, दुर्लभ होता सम्यक् ज्ञान।
संयम धारण करना दुर्लभ, दुर्लभ होता करना ध्यान।।
तीर्थंकर पद पाना दुर्लभ, तीन लोक में रहा महान्।
विशद भाव से नाम आपका, करते हैं हम नित गुणगान।।8।।
शरणागत के सखा आप हो, हरने वाले उनके पाप।
जो भी ध्याए भक्ति भाव से, मिट जाए भव का संताप।।
इस जग के दुःख हरने वाले, भक्तों के तुम हो भगवान।
जब तक जीवन रहे हमारा, करते रहें आपका ध्यान।।9।।

दोहा- नेता मुक्ति मार्ग के, तीन लोक के नाथ।
शिवपद पाने नाथ हम, चरण झुकाते माथ।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अनर्घपदप्राप्त्ये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- हृदय विराजो आन के, मूलनायक भगवान।
मुक्ति पाने के लिए, करते हम गुणगान।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

श्री नवदेवता पूजा

स्थापना

हे लोक पूज्य अरिहंत नमन् !, हे कर्म विनाशक सिद्ध नमन्!
आचार्य देव के चरण नमन् अरु, उपाध्याय को शत् वन्दन।।
हे सर्वसाधु है तुम्हें नमन् ! हे जिनवाणी माँ तुम्हें नमन्!
शुभ जैनधर्म को करूँ नमन्, जिनबिम्ब जिनालय को वन्दन।।
नवदेव जगत् में पूज्य 'विशद', है मंगलमय इनका दर्शन।
नवकोटि शुद्ध हो करते हैं, हम नव देवों का आह्वानन।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिनधर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिनचैत्य चैत्यालय समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिनधर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(शम्भू छंद)

हम तो अनादि से रोगी हैं, भव बाधा हरने आये हैं।
हे प्रभु ! अन्तर तम साफ करो, हम प्रासुक जल भर लाये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती से सारे कर्म धुलें।
हे नाथ ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: जन्म, जरा, मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार ताप में जलकर हमने, अगणित अति दुख पाये हैं।
हम परम सुगंधित चंदन ले, संताप नशाने आये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती से भव संताप गलें।
हे नाथ ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।2।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

यह जग वैभव क्षण भंगुर है, उसको पाकर हम अकुलाए ।
अब अक्षय पद के हेतु प्रभू, हम अक्षत चरणों में लाए ।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चाकर अक्षय शांति मिले।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

बहु काम व्यथा से घायल हो, भव सागर में गोते खाये।
हे प्रभु! आपके चरणों में, हम सुमन सुकोमल ले आये।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चाकर अनुपम फूल खिलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।4।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो:कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हम क्षुधा रोग से अति व्याकुल, होकर के प्रभु अकुलाए हैं।
यह क्षुधा मेटने हेतु चरण, नैवेद्य सुसुन्दर लाए हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती कर सारे रोग टलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।5।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु मोह तिमिर ने सदियों से, हमको जग में भरमाया है।
उस मोह अन्ध के नाश हेतु, मणिमय शुभ दीप जलाया है।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चा कर ज्ञान के दीप जलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।6।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हसिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

भव वन में ज्वाला धधक रही, कर्मों के नाथ सतायें हैं।
हों द्रव्य भाव नो कर्म नाश, अग्नी में धूप जलायें हैं।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, पूजा करके वसु कर्म जलें ।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।7।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सारे जग के फल खाकर भी, हम तृप्त नहीं हो पाए हैं।
अब मोक्ष महाफल दो स्वामी, हम श्रीफल लेकर आए हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ति कर हमको मोक्ष मिले।
हे नाथ ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।8 ।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिनधर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने संसार सरोवर में, सदियों से गोते खाये हैं।
अक्षय अनर्घ पद पाने को, वसु द्रव्य संजोकर लाये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों के, वन्दन से सारे विघ्न टलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।9।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घत्तानंद छन्द

नव देव हमारे, जगत सहारे, चरणों देते जल धारा।
मन वच तन ध्याते, जिन गुण गाते, मंगलमय हो जग सारा।।

शांतये शांति धारा करोमि।

ले सुमन मनोहर अंजलि में भर, पुष्पांजलि दे हर्षाएँ।
शिवमग के दाता ज्ञानप्रदाता, नव देवों के गुण गाएँ।।

दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य (9, 27 या 108 बार)

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिनधर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो नम:।

जयमाला

दोहा – **मंगलमय नव देवता, मंगल करें त्रिकाल।**
मंगलमय मंगल परम, गाते हैं जयमाल।।

(चाल टप्पा)

अर्हन्तों ने कर्म घातिया, नाश किए भाई।
दर्शन ज्ञान अनन्तवीर्य सुख, प्रभु ने प्रगटाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटी से, पूजों हो भाई। जि...

सर्वकर्म का नाश किया है, सिद्ध दशा पाई।
अष्टगुणों की सिद्धि पाकर, सिद्ध शिला जाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटी से, पूजों हो भाई। जि...

पञ्चाचार का पालन करते, गुण छत्तिस पाई।
शिक्षा दीक्षा देने वाले, जैनाचार्य भाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

उपाध्याय है ज्ञान सरोवर, गुण पच्चिस पाई।
रत्नत्रय को पाने वाले, शिक्षा दें भाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई ।। जि...

ज्ञान ध्यान तप में रत रहते, जैन मुनी भाई।
वीतराग मय जिन शासन की, महिमा दिखलाई।

जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

सम्यक्दर्शन ज्ञान चरितमय, जैन धर्म भाई।
परम अहिंसा की महिमा युत, क्षमा आदि पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

श्री जिनेन्द्र की ओम्कार मय, वाणी सुखदाई।
लोकालोक प्रकाशक कारण, जैनागम भाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

वीतराग जिनबिम्ब मनोहर, भविजन सुखदाई।।
वीतराग अरु जैन धर्म की, महिमा प्रगटाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

घंटा तोरण सहित मनोहर, चैत्यालय भाई।
वेदी पर जिनबिम्ब विराजित, जिन महिमा गाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

दोहा– **नव देवों को पूजकर, पाऊँ मुक्ती धाम।**
''विशद'' भाव से कर रहे, शत्–शत् बार प्रणाम्।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा – **भक्ति भाव के साथ, जो पूजें नव देवता।**
पावे मुक्ति वास, अजर अमर पद को लहें।।

इत्याशीर्वाद :

श्री आदिनाथ जिन पूजन

(स्थापना)

हे ज्ञानमूर्ति करुणा निधान !, हे धर्म दिवाकर करुणाकर !
हे तेजपुंज ! हे तपोमूर्ति !, सन्मार्ग दिवाकर रत्नाकर।।
हे मौजमाबाद के आदिनाथ !, तव चरणों में करते वंदन।
यह भक्तशरण में आकर के, प्रभु करते उर से आह्वानन्।।
हम भव सागर में भटक रहे, अब तो मेरा उद्धार करो।
श्री वीतराग सर्वज्ञ महाप्रभु, भव समुद्र से पार करो।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानन्।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

क्षीर नीर सम जल अति निर्मल, रत्न कलश भर लाए हैं।
जन्म मृत्यु का रोग नशाने, तव चरणों में आए हैं।।
हृदय कमल में आन विराजो, सुरभित सुमन बिछाते हैं।
आदिनाथ प्रभु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

दिव्यध्वनि की गंध मनोहर, मन मयूर प्रमुदित करती।
भव आताप निवारण करके, सरल भावना से भरती।।
हृदय कमल में आन विराजो, सुरभित सुमन बिछाते हैं।
आदिनाथ प्रभु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

आदिनाथ जी अष्टापद से, अक्षय निधि को पाए हैं।
अक्षय निधि को पाने हेतु, अक्षय अक्षत लाए हैं।।
हृदय कमल में आन विराजो, सुरभित सुमन बिछाते हैं।
आदिनाथ प्रभु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

क्षणभंगुर जीवन की कलिका, क्षण-क्षण में मुरझाती है।
काम वेदना नशते मन की, चंचलता रुक जाती है।
हृदय कमल में आन विराजो, सुरभित सुमन बिछाते हैं।
आदिनाथ प्रभु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर श्री आदि प्रभु ने, एक वर्ष उपवास किए।
त्याग किए नैवेद्य सभी वह, क्षुधा वेदना नाश किए।।
हृदय कमल में आन विराजो, सुरभित सुमन बिछाते हैं।
आदिनाथ प्रभु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत का दीपक जगमग जलकर, बाहर का तम हरता है।
ज्ञान दीप जलकर मानव को, पूर्ण प्रकाशित करता है।।
हृदय कमल में आन विराजो, सुरभित सुमन बिछाते हैं।
आदिनाथ प्रभु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की ज्वाला में जलकर, बहु संसार बढ़ाया है।
प्रभु तप अग्नि में कर्मों की, शुभ धूप से धूम उड़ाया है।।
हृदय कमल में आन विराजो, सुरभित सुमन बिछाते हैं।
आदिनाथ प्रभु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

महा मोक्ष सुख से हम वंचित, मोक्ष महाफल दान करो।
श्री फल अर्पित करते हैं प्रभु, शिव पद हमें प्रदान करो।।
हृदय कमल में आन विराजो, सुरभित सुमन बिछाते हैं।
आदिनाथ प्रभु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट कर्म का नाश करो प्रभु, अष्ट गुणों को पाना है।
अर्घ्य समर्पित करते हैं प्रभु, अष्टम भूपर जाना है।।

हृदय कमल में आन विराजो, सुरभित सुमन बिछाते हैं।
आदिनाथ प्रभु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

(शम्भू छन्द)

दूज कृष्ण आषाढ़ माह की, मरुदेवी उर अवतारे।
रत्नवृष्टि छह माह पूर्व कर, इन्द्र किए शुभ जयकारे।।
आदिनाथ स्वामी के चरणों, अर्घ्य चढ़ाएँ शुभकारी।
मुक्ति पथ पर बढ़ें हमेशा, सर्व जगत् मंगलकारी।।1।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णा द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत्र कृष्ण नौमी को प्रभु ने, नगर अयोध्या जन्म लिया।
नाभिराय के गृह इन्द्रों ने, आनंदोत्सव महत् किया।।
आदिनाथ स्वामी के चरणों, अर्घ्य चढ़ाएँ शुभकारी।
मुक्ति पथ पर बढ़ें हमेशा, सर्व जगत् मंगलकारी।।2।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्ण नवम्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चैत्र कृष्ण नौमी को प्रभु ने, राग त्याग वैराग्य लिया।
संबोधन करके देवों ने, भाव सहित जयकार किया।।
आदिनाथ स्वामी के चरणों, अर्घ्य चढ़ाएँ शुभकारी।
मुक्ति पथ पर बढ़ें हमेशा, सर्व जगत् मंगलकारी।।3।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णा नवम्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

फाल्गुन वदि एकादशी को प्रभु, कर्म घातिया नाश किए।
लोकोत्तर त्रिभुवन के स्वामी, केवलज्ञान प्रकाश किए।।
आदिनाथ स्वामी के चरणों, अर्घ्य चढ़ाएँ शुभकारी।
मुक्ति पथ पर बढ़ें हमेशा, सर्व जगत् मंगलकारी।।4।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा एकादश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ कृष्ण की चतुर्दशी को, प्रभु ने पाया पद निर्वाण।
सुर नर किन्नर विद्याधर ने, आकर किया विशद गुणगान।।
आदिनाथ स्वामी के चरणों, अर्घ्य चढ़ाएँ शुभकारी।
मुक्ति पथ पर बढ़ें हमेशा, सर्व जगत् मंगलकारी।।5।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णा चतुर्दश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

दोहा– धर्म प्रवर्तक आदि जिन, मैटे भव जञ्जाल।
ऋद्धि सिद्धि सौभाग्य के, हेतु करें जयमाल।।

(तर्ज–राधेश्याम)

सुर नर पशु अनगार मुनि यति, गणधर जिनको ध्याते हैं।
श्री आदिनाथ भगवान आपकी, महिमा भक्तामर गाते हैं।।
जो चरण वंदना करते हैं, वह सुख शांति को पाते हैं।
जो पूजा करते भाव सहित, उनके संकट कट जाते हैं।।
तुमने कलिकाल के आदि में, तीर्थंकर बन अवतार लिया।
इस भरत भूमि की धरती का, आकर तुमने उपकार किया।।
जब भोगभूमि का अंत हुआ, लोगों को यह आदेश दिया।
षट्कर्म करो औ कष्ट हरो, जीवों को यह संदेश दिया।।
तुमने शरीर निज आतम के, शाश्वत स्वभाव को जाना है।
नश्वर शरीर का मोह त्याग, चेतन स्वरूप पहिचाना है।।
तुमने संयम को धारण कर, छह माह का ध्यान लगाया है।
ले दीक्षा चार सहस्र भूप, उनको भी वन में पाया है।।
जब क्षुधा तृषा से अकुलाए, फल फूल तोड़ने लगे भूप।
तब हुई गगन से दिव्य गूंज, यह नहीं चले निर्ग्रंथ रूप।।
फिर छाल पात कई भूपों ने, अपने ही तन पर लपटाईं।
तब खाने पीने की विधियाँ, उन लोगों ने कई अपनाईं।।
जब चर्या को निकले भगवन्, तब विधि किसी ने न जानी।
छह सात माह तक रहे घूमते, आदिनाथ मुनिवर ज्ञानी।।

राजा श्रेयांस ने पूर्वाभास से, साधु चर्या को जान लिया।
पड़गाहन करके आदिराज को, इच्छुरस का दान दिया।।
विधि दिखाकर आदि प्रभु ने, मुनि चर्या के संदेश दिए।
अक्षय हो गई अक्षय तृतिया, देवों ने पंचाश्चर्य किए।।
प्रभुवर ने शुद्ध मनोबल से, निज आतम ध्यान लगाया है।
चउ कर्म घातिया नाश किए, शुभ केवलज्ञान जगाया है।।
देवों ने प्रमुदित भावों से, शुभ समवशरण था बनवाया।
सौधर्म इन्द्र परिवार सहित, प्रभु पूजन करने को आया।।
सुर नर पशुओं ने जिनवर की, शुभ वाणी का रसपान किया।
श्रद्धान ज्ञान चारित पाकर, जीवों ने स्वपर कल्याण किया।।
कैलाश गिरि पर योग निरोध कर, सब कर्मों का नाश किया।
फिर माघ कृष्ण चौदस को प्रभु ने, मोक्ष महल में वास किया।।
तब निर्विकल्प चैतन्य रूप, शिव का स्वरूप प्रभु ने पाया।
अब उस पद को पाने हेतु, प्रभु विशद भाव मन में आया।।
जो शरण आपकी आता है, वह खाली हाथ न जाता है।
जो भक्तिभाव से गुण गाता है, वह इच्छित फल को पाता है।।
हे दीनानाथ ! अनाथों के, हम पर भी कृपा प्रदान करो।
तुमने मुक्ति पद को पाया, वह 'विशद' मोक्ष फल दान करो।।

(आर्या छन्द)

हे आदिनाथ ! तुमको प्रणाम, हे ज्ञानसरोवर ! मुक्ति धाम।
हे धर्म प्रवर्तक ! तीर्थंकर, शिवपद दाता तुमको प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा

आदिनाथ को आदि में, कोटि–कोटि प्रणाम।
'विशद' सिंधु भव सिंधु से, पाएँ हम शिवधाम।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

(नोट– आदिनाथ भगवान के पंचकल्याणक पर ''श्री आदिनाथ विधान'' करें।)

मौजमाबाद के सर्व ऋद्धि-सिद्धिप्रदायक श्री अजितनाथजी की पूजन

(स्थापना)

हे अजितनाथ ! तव चरण माथ, हम झुका रहे जग के प्राणी।
तुम तीन लोक में पूज्य हुए, प्रभु भवि जीवों के कल्याणी।।
मम हृदय कमल पर आ तिष्ठो, हे करुणाकर करुणाकारी।
तव चरणों में वन्दन करते, हे मोक्ष महल के अधिकारी।।
हे नाथ ! कृपा करके मेरे, अन्तर में आन समा जाओ।
तुम राह दिखाओ मुक्ती की, हे करुणाकर उर में आओ।।

ॐ ह्रीं मौजमाबाद के सर्व ऋद्धि-सिद्धि प्रदायक श्री अजितनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

सागर का जल पीकर भी हम, तृषा शांत न कर पाए।
जन्मादि जरा के रोग मिटे, हम प्रासुक जल भरकर लाए।
हे मौजमाबाद के मूलनायक, श्री अजितनाथ अन्तर्यामी।
अब राह दिखाओ शिवपुर की, बनकर के मुक्ती पथगामी।।1।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन के वन में रहकर भी, भवताप शांत न कर पाए।
संताप नशाने भव-भव का, शुभ गंध चढ़ाने हम लाए।
हे मौजमाबाद के मूलनायक, श्री अजितनाथ अन्तर्यामी।
अब राह दिखाओ शिवपुर की, बनकर के मुक्ती पथगामी।।2।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु अक्षय पद पाने हेतू हम, सदा तरसते आए हैं।
अब अक्षय पद पाने को भगवन्, अक्षय अक्षत लाए हैं।।
हे मौजमाबाद के मूलनायक, श्री अजितनाथ अन्तर्यामी।
अब राह दिखाओ शिवपुर की, बनकर के मुक्ती पथगामी।।3।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

व्याकुल होकर कामवासना, से हम बहु अकुलाए हैं।
अब काम बाण के नाश हेतु, यह पुष्प चढ़ाने लाए हैं।।
हे मौजमाबाद के मूलनायक, श्री अजितनाथ अन्तर्यामी।
अब राह दिखाओ शिवपुर की, बनकर के मुक्ती पथगामी।।4।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

जग के सब जीव रहे व्याकुल, जो क्षुधा से बहु अकुलाए हैं।
हो क्षुधा वेदना नाश प्रभो !, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं।।
हे मौजमाबाद के मूलनायक, श्री अजितनाथ अन्तर्यामी।
अब राह दिखाओ शिवपुर की, बनकर के मुक्ती पथगामी।।5।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहित करता है मोह महा, उससे सब जीव सताए हैं।
हम मोह तिमिर के नाश हेतु, यह अतिशय दीपक लाए हैं।।
हे मौजमाबाद के मूलनायक, श्री अजितनाथ अन्तर्यामी।
अब राह दिखाओ शिवपुर की, बनकर के मुक्ती पथगामी।।6।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों के तीव्र सघन वन से, यह धूप जलाने लाए हैं।
हो अष्ट कर्म का शीघ्र नाश, हम साता पाने आए हैं।।
हे मौजमाबाद के मूलनायक, श्री अजितनाथ अन्तर्यामी।
अब राह दिखाओ शिवपुर की, बनकर के मुक्ती पथगामी।।7।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल की चाहत में सदियों से, सारे जग में हम भटकाए ।
हो मोक्ष महाफल प्राप्त हमें, अतएव चढ़ाने फल लाए।।
हे मौजमाबाद के मूलनायक, श्री अजितनाथ अन्तर्यामी।
अब राह दिखाओ शिवपुर की, बनकर के मुक्ती पथगामी।।8।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन आदिक अष्ट द्रव्य, हम श्रेष्ठ चढ़ाने लाए हैं।
हो पद अनर्घ शुभ प्राप्त हमें, हम चरण शरण में आए हैं।।
हे मौजमाबाद के मूलनायक, श्री अजितनाथ अन्तर्यामी।
अब राह दिखाओ शिवपुर की, बनकर के मुक्ती पथगामी।।9।।

ॐ ह्रीं अतिशय क्षेत्र मौजमाबाद स्थित श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

ज्येष्ठ माह की तिथि अमावस, अजितनाथ लीन्हें अवतार।
धन्य हुई विजया माताश्री, गृह में हुए मंगलाचार।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।1।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाऽमावस्यायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

माघ कृष्ण दशमी को जन्मे, जिनवर अजितनाथ तीर्थेश।
पाण्डुक शिला पर न्हवन कराए, इन्द्र सभी मिलकर अवशेष।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।2।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णा दशम्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दशमी शुभ माघ वदी पावन, अजितेश तपस्या धारी है।
इस जग का मोह हटाया है, यह संयम की बलिहारी है।।
हम चरणों में वन्दन करते, मम जीवन यह मंगलमय हो।
प्रभु गुण गाते हम भाव सहित, अब मेरे कर्मों का क्षय हो।।3।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णा दशम्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(चौपाई)

पौष शुक्ल एकादशी आई, केवलज्ञान जगाए भाई।
तीर्थंकर अजितेश कहाए, सुर-नर वंदन करने आए।।
जिसपद को प्रभु तुमने पाया, पाने का वह भाव बनाया।
भाव सहित हम भी गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।4।।

ॐ ह्रीं पौषशुक्ला एकादश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सुदि चैत पञ्चमी जानो, सम्मेद शिखर से मानो।
अजितेश जिनेश्वर भाई, शुभ घड़ी में मुक्ति पाई।।
प्रभु चरणों अर्घ्य चढ़ाते, शुभभाव से महिमा गाते।
हम मोक्ष कल्याणक पाऐं, बस यही भावना भाऐं।।5।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला पंचम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – जिन पूजा के भाव से, कटे कर्म का जाल।
अजित नाथ जिनराज की, गाते हम जयमाल।।

(छन्द मोतियादाम)

जय लोक हितंकर देव जिनेन्द्र, सुरासुर पूजे इन्द्र नरेन्द्र।
करें अर्चन कर जोर महेन्द्र, करें पद वन्दन देव शतेन्द्र।
प्रभु हैं जग में सर्व महान्, करूँ मैं भाव सहित गुणगान।
गर्भ के पूरव से छह मास, बने सुर इन्द्र प्रभु के दास।
करें रत्नों की वृष्टि अपार, करें पद वन्दन बारम्बार।
मनाते गर्भ कल्याणक आन, करें नित भाव सहित गुणगान।
प्रभु का होवे जन्म कल्याण, करें पूजा तब देव महान।
ऐरावत लावें इन्द्र प्रधान, करें गुणगान सुरासुर आन।
करें अभिषेक सभी मिल देव, सुमेरू गिरि के ऊपर एव।
बढ़े जग में आनन्द अपार, रही महिमा कुछ अपरम्पार।
रहे जग में बन के नर नाथ, झुकाते चरणों में सब माथ।
मिले जब प्रभु को कोई निमित्त, लगे तब संयम में शुभ चित्त।
गिरि कन्दर शिखरों पर घोर, सुतप धारें अति भाव विभोर।
जगे फिर प्रभु को केवलज्ञान, करें सुर नर पद में गुणगान।
करें उपदेश प्रभु जी महान, करें सुन के प्राणी कल्याण।
करे प्रभु जी फिर कर्म विनाश, प्रभु करते शिवपुर में वास।
बने अविकार अखण्ड विशुद्ध, अजरामर होते पूर्ण प्रबुद्ध।
'विशद' मन में मेरे यह चाह, मिले हमको प्रभु सम्यक् राह।

छन्द घत्तानंद-जय-जय उपकारी संयमधारी, मोक्ष महल के अधिकारी।
सद्गुण के धारी जिन अविकारी, सर्व दोष के परिहारी।।

ॐ ह्रीं मौजमाबाद स्थित सर्व ऋद्धि-सिद्धि प्रदायक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – अजितनाथ से नाथ का, को कर सके बखान।
चरण वन्दना कर मिले, उभय लोक सम्मान।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र मौजमाबाद स्थित जिनालय जिनबिम्बों की समुच्चय पूजा

(स्थापना)

जिनका यश अनुपम गूँज रहा, धरती से गगन के तारों तक।
मंगल होता जिनके द्वारा, भू से स्वर्गों के द्वारों तक।।
गौरव गरिमा जिनकी गाके, हर प्राणी खुश हो जाते हैं।
श्रद्धा से जिनके चरणों में, माथा सद् भक्त झुकाते हैं।।
हैं मौजमाबाद के तलघर में, श्री आदिनाथ अतिशयकारी।
श्री अजितनाथ मूलवेदी में, आह्वानन् करते मंगलकारी।।

ॐ ह्रीं मूलनायक श्री आदिनाथ-अजितनाथ सहित सर्व जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चौबोला छन्द)

हमने अनादि से पिया नीर, फिर भी भव रोग बढ़ाया है।
भव सागर में गोते खाये, ना अन्त आज तक आया है।।
शुभ तीर्थ मौजमाबाद रहा, जो पावन है अतिशयकारी।
हम पूज रहे जिनबिम्ब विशद, जो अनुपम हैं मंगलकारी।।1।।

ॐ ह्रीं मौजमाबाद जिनालय स्थित मूलनायक श्री आदिनाथ-अजितनाथ सहित सर्व जिनबिम्बेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने अनादि से मोह जन्य, चन्दन का ही उपयोग किया।
तन का संताप मिटाया पर, कर्मों का बन्धन बाँध लिया।।
शुभ तीर्थ मौजमाबाद रहा, जो पावन है अतिशयकारी।
हम पूज रहे जिनबिम्ब विशद, जो अनुपम हैं मंगलकारी।।2।।

ॐ ह्रीं मौजमाबाद जिनालय स्थित मूलनायक श्री आदिनाथ-अजितनाथ सहित सर्व जिनबिम्बेभ्यो संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने अज्ञानी होकर के, अक्षत बहु धवल चढ़ाए हैं।
आशा में भटके मारे-मारे, ना अक्षय पदवी पाए हैं।।
शुभ तीर्थ मौजमाबाद रहा, जो पावन है अतिशयकारी।
हम पूज रहे जिनबिम्ब विशद, जो अनुपम हैं मंगलकारी।।3।।

ॐ ह्रीं मौजमाबाद जिनालय स्थित मूलनायक श्री आदिनाथ-अजितनाथ सहित सर्व जिनबिम्बेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

आस्रव भावों को पाकर के, हमने संसार बढ़ाया है।
अतएव चतुर्गति में अतिशय, कामी होकर दुख पाया है।।
शुभ तीर्थ मौजमाबाद रहा, जो पावन है अतिशयकारी।
हम पूज रहे जिनबिम्ब विशद, जो अनुपम हैं मंगलकारी।।4।।

ॐ ह्रीं मौजमाबाद जिनालय स्थित मूलनायक श्री आदिनाथ-अजितनाथ सहित सर्व जिनबिम्बेभ्यो कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हमको अनादि से क्षुधा व्याधि, तड़पा-तड़पा कर मार रही।
नैवेद्य ज्ञान का पाया ना, ना मिला मोक्ष का मार्ग सही।।
शुभ तीर्थ मौजमाबाद रहा, जो पावन है अतिशयकारी।
हम पूज रहे जिनबिम्ब विशद, जो अनुपम हैं मंगलकारी।।5।।

ॐ ह्रीं मौजमाबाद जिनालय स्थित मूलनायक श्री आदिनाथ-अजितनाथ सहित सर्व जिनबिम्बेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने अनादि से पुद्गलमय, घृत के ही दीप जलाये हैं।
हम मोह-तिमिर में अन्ध हुए, मानादिक भाव जगाए हैं।।
शुभ तीर्थ मौजमाबाद रहा, जो पावन है अतिशयकारी।
हम पूज रहे जिनबिम्ब विशद, जो अनुपम हैं मंगलकारी।।6।।

ॐ ह्रीं मौजमाबाद जिनालय स्थित मूलनायक श्री आदिनाथ-अजितनाथ सहित सर्व जिनबिम्बेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

मायाचारी के भाव किए, कर्मों के बन्ध बढ़ाये हैं।
अब अष्ट कर्म का बन्ध नशे, यह धूप जलाने लाए हैं।।
शुभ तीर्थ मौजमाबाद रहा, जो पावन है अतिशयकारी।
हम पूज रहे जिनबिम्ब विशद, जो अनुपम हैं मंगलकारी।।7।।

ॐ ह्रीं मौजमाबाद जिनालय स्थित मूलनायक श्री आदिनाथ-अजितनाथ सहित सर्व जिनबिम्बेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम चाह दाह में जले सदा, फल कर्मों के हमने पाए।
है शाश्वत मोक्ष महाफल जो, पाने को नाथ शरण आए।।
शुभ तीर्थ मौजमाबाद रहा, जो पावन है अतिशयकारी।
हम पूज रहे जिनबिम्ब विशद, जो अनुपम हैं मंगलकारी।।8।।

ॐ ह्रीं मौजमाबाद जिनालय स्थित मूलनायक श्री आदिनाथ-अजितनाथ सहित सर्व जिनबिम्बेभ्यो मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

भव-भव में दुख पाये हमने, अनगिनते अर्घ्य चढ़ाए हैं।
चारों गतियों में भ्रमण किया, ना पद अनर्घ्य को पाए हैं।।
शुभ तीर्थ मौजमाबाद रहा, जो पावन है अतिशयकारी।
हम पूज रहे जिनबिम्ब विशद, जो अनुपम हैं मंगलकारी।।9।।

ॐ ह्रीं मौजमाबाद जिनालय स्थित मूलनायक श्री आदिनाथ-अजितनाथ सहित सर्व जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- पूजा करते आपकी, कृपा सिन्धु भगवान।
शांती धारा दे रहे, पाएँ पद निर्वाण।। शान्तये शान्तिधारा

दोहा- पुष्पाञ्जलि करते विशद, हम हे दीनानाथ।
शिवपद हमको दीजिए, झुका रहे पद माथ।। दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

समुच्चय जयमाला

दोहा- तीर्थ मौजमाबाद में, हैं जिनबिम्ब विशाल।
जिनकी हम गाते विशद, भाव सहित जयमाल।।

(रेखता छन्द)

देव विद्याधर नर योगीश, करें सब जिनवर का गुणगान।
अनादी कट जाते हैं पाप, करें जो भाव सहित यशगान।।
पूर्व का पुण्योदय कर प्राप्त, जगाया अन्दर में श्रद्धान।
प्रकट कर तुमने सम्यक् ज्ञान, प्राप्त की चेतन की पहिचान।।
धारकर के सम्यक् चारित्र, लगाया निज आतम का ध्यान।
घातिया करके कर्म विनाश, जगाया पावन केवलज्ञान।।

देशना देकर के हे नाथ !, किया है तुमने जग कल्याण।
दुखी जीवों पे कर उपकार, दिया है तुमने जीवन दान।।
प्रथम तीर्थंकर आदीनाथ, दिए षट् कर्मों का उपदेश।
दिखाए मुक्ती का शुभ मार्ग, अजित से महावीर तक शेष।।
तीर्थ यह रहा मौजमाबाद, यहाँ की महिमा अपरम्पार।
रहे तलघर में आदिनाथ, अन्य जिनबिम्ब हैं मंगलकार।।
रहे वेदी में अजित जिनेश, तीर्थ है भारी अतिशयकार।
विशद साधिक दौ सौ जिनबिम्ब, पूजते जिनपद बारम्बार।।
तीर्थ है भारी यह प्राचीन, हुए कई अतिशय यहाँ महान।
यहाँ आके देखे कई भक्त, करे शब्दों में को गुणगान।।
कोई पाए आके आरोग्य, किसी ने पाई है सन्तान।
कोई पाए आके सौभाग्य, कोई पाए धनमाल मकान।।
किसी ने भक्ती करके खूब, चलाया है अपना व्यापार।
किसी ने व्रत संयम को धार, किया निज आतम का उद्धार।।
दर्श जो कर लेता इक बार, चला आता वह बारम्बार।
नेत्र ना हो पाते हैं तृप्त, दर्शकर प्रभु का अपरम्पार।।
भावना भाते हे भगवान !, शीघ्र हो मेरा भी कल्याण।
चरण की पूजा का फल नाथ !, प्राप्त हो हम को पद निर्वाण।।
पूर्ण इच्छा करते हैं जीव, नाथ आकर के तुमरे द्वार।
भक्ती करते हैं भाव समेत, बोलते हैं पावन जयकार।।
भावना भाते हम हे नाथ ! दर्श हो हमको बारम्बार।
प्राप्त हो शांति 'विशद' सौभाग्य, करो हे नाथ ! एक उपकार।।

दोहा- भक्ती करते भाव से, तव चरणों हे नाथ।
हमको भी अब दीजिए, मोक्ष मार्ग में साथ।।

ॐ ह्रीं मौजमाबाद जिनालय स्थित मूलनायक श्री आदिनाथ-अजितनाथ सहित सर्व जिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- प्रभु की अर्चा से 'विशद', हो जग का कल्याण।
शिवपथ के राही बने, पावें पद निर्वाण।।

इत्याशीर्वादः

श्री नेमिनाथ जिन पूजा

(स्थापना)

नेमिनाथ के श्रीचरणों में, भव्य जीव आ पाते हैं।
तीर्थंकर जिन के दर्शन से, सर्व कर्म कट जाते हैं।।
गिरि गिरनार के ऊपर श्रीजिन, को हम शीश झुकाते हैं।
हृदय कमल के सिंहासन पर, आह्वानन् कर तिष्ठाते हैं।।
राहू अरिष्ट ग्रह शांत करो प्रभु, हमने तुम्हें पुकारा है।
हमको प्रभु भव से पार करो, तुम बिन न कोई हमारा है।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र ! अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

विषयों के विष की प्याला को, पीकर के जन्म गँवाया है।
नहिं जन्म मरण के दुःखों से, छुटकारा मिलने पाया है।।
हम मिथ्या मल धोने प्रभुजी, शुभ कलश में जल भर लाए हैं।
अर्चा करते हम भाव सहित, चरणों में शीश झुकाए हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोधादि कषायों के कारण, संताप हृदय में छाया है।
मन शांत रहे मेरा भगवन्, यह भक्त चरण में आया है।।
संसार ताप के नाश हेतु, हम शीतल चंदन लाए हैं।
अर्चा करते हम भाव सहित, चरणों में शीश झुकाए हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षणभंगुर वैभव जान प्रभु, तुमने सब राग नशाया है।
व्रत संयम तेज तपस्या से, अभिनव अक्षय पद पाया है।।
हो अक्षय पद प्राप्त हमें, हम अक्षय अक्षत लाए हैं।
अर्चा करते हम भाव सहित, चरणों में शीश झुकाए हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

है प्रबल काम शत्रु जग में, तुमने उसको ठुकराया है।
यह भक्त समर्पित चरणों में, तुमसा बनने को आया है।।
प्रभु कामबाण के नाश हेतु, यह प्रमुदित पुष्प चढ़ाए हैं।
अर्चा करते हम भाव सहित, चरणों में शीश झुकाए हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ ! भोग की तृष्णा ने, अरु क्षुधा ने हमें सताया है।
मन मर्कट खाकर सब पदार्थ, यह तृप्त नहीं हो पाया है।।
प्रभु क्षुधा रोग के शमन हेतु, यह व्यंजन सरस ले आए हैं।।
अर्चा करते हम भाव सहित, चरणों में शीश झुकाए हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहांध महा अज्ञानी हम, जीवन में घोर तिमिर छाया।
मैं रागी द्वेषी बना रहा, निज के स्वभाव से बिसराया।।
मोहांधकार का नाश करें, यह दीप जलाने लाए हैं।
अर्चा करते हम भाव सहित, चरणों में शीश झुकाए हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की सेना ने कैसा, यह चक्र व्यूह रचवाया है।
मुझ भोले-भाले प्राणी को, क्यों उसके बीच फँसाया है।।
अब अष्ट कर्म की धूप जले, यह धूप जलाने लाए हैं।
अर्चा करते हम भाव सहित, चरणों में शीश झुकाए हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने चित् चेतन का चिंतन, अरु मनन नहीं कर पाया है।
सद्दर्शन ज्ञान चरित का फल, शुभ फल निर्वाण न पाया है।।
अब मोक्ष महाफल दो स्वामी, हम श्रीफल लेकर आए हैं।
अर्चा करते हम भाव सहित, चरणों में शीश झुकाए हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अविचल अनर्घ पद पाने का, हमने अब भाव जगाया है।
अतएव प्रभु वसु द्रव्यों का, अनुपम यह अर्घ्य बनाया है।।
दो पद अनर्घ हमको स्वामी, यह अर्घ्य संजोकर लाए हैं।
अर्चा करते हम भाव सहित, चरणों में शीश झुकाए हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

नेमिनाथ भगवान, कार्तिक शुक्ला षष्ठमी।
पाए गर्भ कल्याण, शिवा देवी उर आ बसे।।1।।

ॐ ह्रीं कार्तिक शुक्लाषष्ठभ्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री नेमिनाथाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

हुआ जन्म कल्याण, श्रावण शुक्ला षष्ठमी।
शौर्य पुरी नगरी शुभम्, समुद्र विजय हर्षित हुए।।2।।

ॐ ह्रीं श्रावण शुक्लाषष्ठभ्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री नेमिनाथाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सहस्र आम्रवन बीच, श्रावण शुक्ला षष्ठमी।
पशु आक्रंदन देख, तप धारे गिरनार पर।।3।।

ॐ ह्रीं श्रावण शुक्लाषष्ठभ्यां तपकल्याणक प्राप्त श्री नेमिनाथाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

हुआ ज्ञान कल्याण, आश्विन शुक्ल प्रतिपदा।
स्वपर प्रकाशी ज्ञान, नेमिनाथ जिन पा लिए।।4।।

ॐ ह्रीं आश्विन शुक्ला प्रतिपदायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री नेमिनाथाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पाए पद निर्वाण, आठें शुक्ल अषाढ़ की।
हुआ मोक्ष कल्याण, ऊर्जयन्त के शीर्ष से।।5।।

ॐ ह्रीं आषाढ़ शुक्ला अष्टम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री नेमिनाथाय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

जयमाला

दोहा– **समुद्र विजय के लाड़ले, शिवादेवी के लाल।**
नेमिनाथ जिनराज की, गाते हैं जयमाल।।

(राधेश्याम छन्द)

सुरेन्द्र नरेन्द्र मुनीन्द्र गणीन्द्र, शतेन्द्र सुध्यान लगाते हैं।
जिनराज की जय जयकार करें, उनका यश मंगल गाते हैं।।
जो ध्यान प्रभु का करते हैं, दुख उनके सारे हरते हैं।
जो चरण शरण में आ जाते, वह भवसागर से तरते हैं।।
तुम धर्ममई हो कर्मजई, तुममें जिनधर्म समाया है।
तुम जैसा बनने हेतु नाथ !, यह भक्त चरण में आया है।।
प्रभु द्रव्य भाव नोकर्म सभी, अरु राग द्वेष भी हारे हैं।
प्रभु तन में रहते हुए विशद, रहते उससे अति न्यारे हैं।।
जिसको भव सुख की चाह नहीं, वह दुख से क्या भय खाते हैं।
वह महाबली जिन धीर वीर, भवसागर से तिर जाते हैं।।
जो दयावान करुणाधारी, वात्सल्यमयी गुणसागर हैं।
वह सर्वसिद्धियों के नायक, शुभ रत्नों के रत्नाकर हैं।।
शुभ नित्य निरंजन शिव स्वरूप, चैतन्य रूप तुमने पाया।
उस मंगलमय पावन पवित्र, पद पाने को मन ललचाया।।
कर्मों के कारण जीव सभी, भव सागर में गोते खाते ।
जो शरण आपकी आते हैं, वह उनके पास नहीं आते ।।
तुम हो त्रिकालदर्शी प्रभुवर, तुमने तीर्थंकर पद पाया है।
तुमने सर्वज्ञता को पाया, अरु केवलज्ञान जगाया है।।
तुम हो महान् अतिशय धारी, तुम विधि के स्वयं विधाता हो।
सुर नर नरेन्द्र की बात कहाँ, तुम तो जन–जन के त्राता हो।।
तुम हो अनन्त ज्ञाता दृष्टा, चिन्मूरत हो प्रभु अविकारी।
जो शरण आपकी आ जाए, वह बने स्वयं मंगलकारी।।
जो मोह महामद मदन काम, इत्यादि तुमसे हारे हैं।
जो रहे असाता के कारण, चरणों झुक जाते सारे हैं।।
ज्यों तरुवर के नीचे आने से, राही शीतल छाया पाता।
प्रभु के शरणागत आने से, स्वमेव आनन्द समा जाता।।

तुमने पशुओं का आक्रन्दन, लख कर संसार असार कहा।
यह तो अनादि से है असार, इसका ऐसा स्वरूप रहा।।
हे जगत पिता ! करुणा निधान, यह सब तो एक बहाना था।
शायद कुछ इसी बहाने से, राजुल को पार लगाना था।।
राजुल का तुमने साथ दिया, उससे नव भव की प्रीति रही।
पर हमसे प्रीति निभाई न, वह खता तो हमसे कहो सही।।
अब शरण खड़ा है शरणागत, इसका भी बेड़ा पार करो।
कर रहा भक्ति के वशीभूत, हे ! दयासिंधु स्वीकार करो।।
जो शरण आपकी आ जाए, वह भव में कैसे भटकेगा।
जो भक्ति भाव से गुण गाए, वह जग में कैसे अटकेगा।।
तुम तीर्थंकर बाईसवें प्रभु, तुम बाईस परीषह को जीते।
तुमने अनन्त बल सुख पाया, तुम निजानन्द रस को पीते।।
जैसे प्रभु भव से पार हुए, वैसे मुझको भी पार करो।
हमको आलम्बन दे करके, प्रभु इस जग से उद्धार करो।
जो भाव सहित पूजा करते, वह पूजा का फल पाते हैं।।
पूजा के फल से भक्तों के, सारे संकट कट जाते हैं।
हम जन्म-मृत्यु के संकट से, घबड़ाकर चरणों आये हैं।
अब 'विशद' मोक्ष महापद पाने को, चरणों में शीश झुकाये हैं।।

(छन्द घत्तानन्द)

जय नेमि जिनेशं हितउपदेशं, शुद्ध बुद्ध चिद्रूपयति।
जय परमानन्दं आनन्दकंद, दयानिकंदं ब्रह्मपति।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दोहा- **नेमिनाथ के द्वार पर, पूरी होती आश।**
मुक्ति हो संसार से, पूरा है विश्वास।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री पार्श्वनाथ जिन पूजा

(स्थापना)

हे पार्श्व प्रभो ! हे पार्श्व प्रभो ! मेरे मन मंदिर में आओ।
विघ्नों को दूर करो स्वामी, जग में सुख शांति दर्शाओ।।
सब विघ्न दूर हो जाते हैं, प्रभु नाम आपका लेने से।
जीवन मंगलमय हो जाता, जिन अर्घ्य चरण में देने से।।
हे ! तीन लोक के नाथ प्रभु, जन-जन से तुमको अपनापन।
मम् हृदय कमल में आ तिष्ठो, है 'विशद' भाव से आह्वानन।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्रावतरावतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(गीता छन्द)

स्वर्ण कलश में प्रासुक जल ले, जो नित पूजन करते हैं।
मंगलमय जीवन हो उनका, सब दुख दारिद हरते हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज मैं विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व.स्वाहा।

परम सुगन्धित मलयागिरि का, चन्दन चरण चढ़ाते हैं।
दिव्य गुणों को पाकर प्राणी, दिव्य लोक को जाते हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धवल मनोहर अक्षय अक्षत, लेकर अर्चा करते हैं।
अक्षय पद हो प्राप्त हमें प्रभु, चरणों में सिर धरते हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

कमल चमेली वकुल कुसुम से, प्रभु की पूजा करते हैं।
मंगलमय जीवन हो उनका, सुख के झरने झरते हैं।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।

शक्कर घृत मेवा युत व्यंजन, कनक थाल में लाये हैं।
अर्पित करते हैं प्रभु पद में, क्षुधा नशाने आये हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत के दीप जलाकर सुन्दर, प्रभु की आरति करते हैं।
मोह तिमिर हो नाश हमारा, वसु कर्मों से डरते हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय महामोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन केशर आदि सुगंधित, धूप दशांग मिलाये हैं।
अष्ट कर्म हों नाश हमारे, अग्नि बीच जलाए हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री फल केला और सुपारी, इत्यादिक फल लाए हैं।
श्री जिनवर के पद पंकज में, मिलकर आज चढ़ाए हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल फल आदिक अष्ट द्रव्य से, अर्घ समर्पित करते हैं।
पूजन करके पार्श्वनाथ की, कोष पुण्य से भरते हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य *(त्रिभंगी छन्द)*

स्वर्गों में रहे, प्राणत से चये, माँ वामा उर में गर्भ लिये।
वसु देव कुमारी, अतिशयकारी, गर्भ समय में शोध किए।।
श्री विघ्न विनाशक, अरिगण नाशक, पारस जिन की सेव करें।
त्रिभुवन के ज्ञायक, शिव दर्शायक, प्रभु के पद में शीश धरें।।1।।

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तिथि पौष एकादशि, कृष्णा की निशि, काशी में अवतार लिया।
देवों ने आकर, वाद्य बजाकर, आनन्दोत्सव महत किया।।
श्री विघ्न विनाशक, अरिगण नाशक, पारस जिन की सेव करें।
त्रिभुवन के ज्ञायक, शिव दर्शायक, प्रभु के पद में शीश धरें ।।2।।

ॐ ह्रीं पौषवदी ग्यारस जन्मकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

कलि पौष एकादशि, व्रत धरके असि, प्रभुजी तप को अपनाया।
भा बारह भावन, अति ही पावन, भेष दिगम्बर तुम पाया।।
श्री विघ्न विनाशक, अरिगण नाशक, पारस जिन की सेव करें ।
त्रिभुवन के ज्ञायक, शिव दर्शायक, प्रभु के पद में शीश धरें ।।3।।

ॐ ह्रीं पौषवदी ग्यारस तपकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

जब क्रूर कमठ ने, बैरी शठ ने, अहि क्षेत्र में कीन्ही मनमानी।
तब चैत अंधेरी, चौथ सवेरी, आप हुए केवलज्ञानी।।
श्री विघ्न विनाशक, अरिगण नाशक, पारस जिन की सेव करें।
त्रिभुवन के ज्ञायक, शिव दर्शायक, प्रभु के पद में शीश धरें।।4।।

ॐ ह्रीं चैत्रवदी चतुर्थी कैवल्य ज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सित सातै सावन, अतिमन भावन, सम्मेद शिखर पे ध्यान किए।
वर के शिवनारी, अतिशयकारी, आतम का कल्याण किए।।
श्री विघ्न विनाशक, अरिगण नाशक, पारस जिन की सेव करें।
त्रिभुवन के ज्ञायक शिव दर्शायक, प्रभु के पद में शीश धरें ।।5।।

ॐ ह्रीं सावनसुदी सप्तमी मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जयमाला

दोहा– **माँ वामा के लाड़ले, अश्वसेन के लाल।**
विघ्न विनाशक पार्श्व की, कहते हैं जयमाल ।।1 ।।

(छंद)

चित् चिंतामणि नाथ नमस्ते, शुभ भावों के साथ नमस्ते।
ज्ञान रूप ओंकार नमस्ते, त्रिभुवन पति आधार नमस्ते।।2।।
श्री युत श्री जिनराज नमस्ते, भव सर मध्य जहाज नमस्ते।
सद् समता युत संत नमस्ते, मुक्ति वधु के कंत नमस्ते।।3।।
सद्गुण युत गुणवन्त नमस्ते, पार्श्वनाथ भगवंत नमस्ते।
अरि नाशक अरिहंत नमस्ते, महा महत् महामंत्र नमस्ते।।4।।
शांति दीप्ति शिव रूप नमस्ते, एकानेक स्वरूप नमस्ते।
तीर्थंकर पद पूत नमस्ते, कर्म कलिल निर्धूत नमस्ते।।5।।
धर्म धुरा धर धीर नमस्ते, सत्य शिवं शुभ वीर नमस्ते।
करुणा सागर नाथ नमस्ते, चरण झुका मम् माथ नमस्ते।।6।।
जन जन के शुभ मीत नमस्ते, भव हर्ता जगजीत नमस्ते।
बालयति आधीश नमस्ते, तीन लोक के ईश नमस्ते।।7।।
धर्म धुरा संयुक्त नमस्ते, सद् रत्नत्रय युक्त नमस्ते।
निज स्वरूप लवलीन नमस्ते, आशा पाश विहीन नमस्ते।।8।।
वाणी विश्व हिताय नमस्ते, उभय लोक सुखदाय नमस्ते।
जित् उपसर्ग जिनेन्द्र नमस्ते, पद पूजित सत् इन्द्र नमस्ते।।9।।

दोहा– **भक्त्याष्टक नित जो पढ़े, भक्ति भाव के साथ।**
सुख सम्पत्ति ऐश्वर्य पा, हो त्रिभुवन का नाथ।।10।।

ॐ ह्रीं श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **चरण शरण के भक्त की, भक्ति फले अविराम।**
मुक्ति पाने के लिए, करते 'विशद' प्रणाम्।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

अर्घ्यावली

विद्यमान बीस तीर्थंकरों का अर्घ्य

पद अनर्घ पाने का, मन में भाव न आया।
पञ्च परावर्तन करके, संसार बढ़ाया।।
अर्घ्य चढ़ाते चरण में, पाने को शिवद्वार।
पूजा करते भाव से, पाने को भव पार।।
मोक्ष दातार जी, तुम हो दीनदयाल, परम शिवकार जी।।

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रस्य विद्यमान विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत्रिम जिनबिम्बों का अर्घ्य

सात करोड़ बहत्तर लाख, सु–भवन जिन पाताल में।
मध्यलोक में चार सौ अट्ठावन, जजों अघमल टाल के।।
अब लख चौरासी सहस सत्यावन, अधिक तेईस रु कहे।
बिन संख ज्योतिष व्यन्तरालय, सब जजों मन वच ठहे।।

ॐ ह्रीं त्रिलोक संबंधि कृत्रिमाकृत्रिमजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत्रिम चैत्यालयों का अर्घ्य

अकृत्रिम जिन चैत्यालय शुभ, मध्य लोक में रहे महान्।
भावन व्यन्तर ज्योतिष वासी, स्वर्ग में जो भी रहे विमान।।
जल गंधाक्षत पुष्प चरु शुभ, दीप धूप फल ले शुभकार।
'विशद' कर्म की शांति हेतु हम, अर्घ्य चढ़ाते यह मनहार।।

ॐ ह्रीं कृत्रिमाकृत्रिम–चैत्यालय सम्बंधिजिन बिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध भगवान का अर्घ्य

हम अष्ट गुणों की सिद्धि हेतु, यह अर्घ्यं बनाकर लाये हैं।
होगा अनन्त सुख प्राप्त हमें, यह भाव बनाकर आये हैं।।

हे सिद्ध! सनातन अविकारी, मेरे अन्तर में वास करो ।
चरणों में दास खड़े भगवन्, जीवन में धर्म प्रकाश भरो ।।

ॐ ह्रीं सर्व कर्म विनाशक सिद्धचक्राधिपते श्री सिद्धपरमेष्ठिने अनर्घपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री आदिनाथ भगवान का अर्घ्य

अष्ट कर्म का नाश करो प्रभु, अष्ट गुणों को पाना है।
अर्घ्य समर्पित करते हैं प्रभु, अष्टम भूपर जाना है।।
'विशद' हृदय में आन विराजो, सुरभित सुमन बिछाते हैं।
आदिनाथ प्रभु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पद्मप्रभ भगवान का अर्घ्य

प्रासुक नीर सुगंध सुअक्षत, पुष्प चरू ले दीप जलाय।
धूप और फल अष्ट द्रव्य ले, श्री जिनवर के चरण चढ़ाय।।
रवि अरिष्ट ग्रह की शांती को, पद्मप्रभ पद शीश झुकाय।
हे करुणाकर ! भव दुख हर्ता, 'विशद' पूजते मन वच काय।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री चन्द्रप्रभ भगवान का अर्घ्य

जल गंध आदिक द्रव्य वसु ले, अर्घ्य शुभम् बनाए हैं।
शाश्वत सुखों की प्राप्ति हेतू, थाल भरकर लाए हैं।।
श्री चन्द्रप्रभु के चरण की, शुभ वंदना से हो चमन।
हम सिर झुकाकर विशद पद में, कर रहे शत् शत् नमन्।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री वासुपूज्य भगवान का अर्घ्य

जग में सद् असद् द्रव्य जो हैं, उन सबके अर्घ बताए हैं।
अब पद अनर्घ की प्राप्ति हेतु, हम अर्घ बनाकर लाए हैं ।।

हम पद अनर्घ को पा जाएँ, हे वासुपूज्य ! जिनवर स्वामी।
हमको प्रभु ऐसी शक्ती दो, हम बनें 'विशद' अन्तर्यामी।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शांतिनाथ भगवान का अर्घ्य

यह अष्ट द्रव्य हम लाए हैं, हमने शुभ अर्घ्य बनाया है।
पाने अनर्घ पद हे स्वामी, तव चरणों विशद चढ़ाया है।।
हमको डर लगता कर्मों से, हे नाथ ! दूर मेरा भय हो।
हम अर्घ्य चढ़ाते भाव सहित, मम् जीवन भी शांतीमय हो।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री नेमिनाथ भगवान का अर्घ्य

अविचल अनर्घ पद पाने का, हमने अब भाव जगाया है।
अतएव प्रभू वसु द्रव्यों का, अनुपम यह अर्घ्य बनाया है।।
दो पद अनर्घ हमको स्वामी, यह अर्घ्य संजोकर लाए हैं।
अर्चा करते हम 'विशद' यहाँ, चरणों में शीश झुकाए हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पार्श्वनाथजी का अर्घ्य

जल फल आदिक अष्ट द्रव्य से, अर्घ समर्पित करते हैं।
पूजन करके पार्श्वनाथ की, कोष पुण्य से भरते हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री महावीर भगवान का अर्घ्य

हम राग द्वेष में अटक रहे, ईर्ष्या भी हमें जलाती है ।
जग में सदियों से भटक रहे, पर शांति नहीं मिल पाती है ।।
हम अर्घ्य 'विशद' यह लाए हैं, मन का संताप विनाश करो ।
हे वीर प्रभु करुणा करके, सद्दर्शन ज्ञान प्रकाश भरो।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय चौबीसी भगवान का अर्घ्य

पुण्य पाप के फल हैं निष्फल, उसमें हम भरमाए हैं।
आस्रव बंध के कारण हमने, जग के बहु दुख पाए हैं।।
पद अनर्घ को पाने हेतू, अनुपम अर्घ्य चढ़ाते हैं।
हम भरत क्षेत्र की चौबीसी को, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच बालयति का अर्घ्य

कर्मों का घोर तिमिर छाया, मिथ्यात्व जाल फैलाए है।
हम भूल गये सद्राह प्रभो !, न पार उसे कर पाए हैं।।
हम पद अनर्घ पाने हेतू, यह अर्घ्य 'विशद' करते अर्पण।
वासुपूज्य अरु मल्लि नेमि जिन, पार्श्व वीर पद में वन्दन।।

ॐ ह्रीं श्री पंच बालयति वासुपूज्य, मल्लि, नेमि, पार्श्व, वीर जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री बाहुबली स्वामी का अर्घ्य

हमने जग के सब द्रव्यों को, पाकर के कीन्हा जन्म-मरण।
अब पद अनर्घ हेतू प्रभुवर, यह अर्घ्य 'विशद' करते अर्पण।।
एक वर्ष का ध्यान लगाकर, निज स्वभाव में किया रमण।
बाहुबली के श्री चरणों में, मेरा बारम्बार नमन्।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोलहकारण का अर्घ्य

हम पद अनर्घ न पाए, आठों पृथ्वी भटकाए।
'विशद' हम यह अर्घ्य लाए, पाने अनर्घ पद आए।।
है भव्य भावना भाई, शुभ तीर्थंकर पद दायी।
हम सोलह कारण भाते, नत सादर शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादि-षोडशकारणेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचमेरु का अर्घ्य

हमने सच्चा स्वरूप, अब तक न पाया।
मेरा है चेतन रूप, उसको बिसराया।।
हैं पञ्चमेरु के मध्य, अस्सी जिन मंदिर।
शुभ रत्नमयी हैं भव्य, अतिशय जो सुन्दर।।

ॐ ह्रीं पंचमेरु सम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नंदीश्वरद्वीप का अर्घ्य

प्राप्त करने हम सुपद अनर्घ्य, चढ़ाते अष्ट द्रव्य का अर्घ्य।
झुकाते हम चरणों में माथ, भावना पूरी कर दो नाथ।।
द्वीप नन्दीश्वर 'विशद' महान्, जिनालय में सोहें भगवान।
करें हम भाव सहित गुण गान, प्राप्त हो हमको पद निर्वाण।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टमद्वीपनन्दीश्वर संबंधित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशलक्षण का अर्घ्य

शाश्वत पद के बिना जगत में, बार-बार भटकाए हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें हम, अर्घ्य चढ़ाने आए हैं।।
निज स्वभाव को हम पा जाएँ, विशद भावना भाते हैं।
उत्तम धर्म प्रगट करने को, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

रत्नत्रय का अर्घ्य

आठों द्रव्यों का अर्घ्य, बनाकर यह लाए।
पाने हम सुपद अनर्घ, अर्घ्य लेकर आए।।
रत्नत्रय रहा महान्, विशद अतिशयकारी।
करके कर्मों की हान, श्रेष्ठ मंगलकारी।।

ॐ ह्रीं सम्यक्-दर्शन-ज्ञान-चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्वाण क्षेत्र अर्घ्य

हम अष्ट द्रव्य का अर्घ्य 'विशद', यह शुद्ध बनाकर लाए हैं।
अष्टम वसुधा है सिद्ध भूमि, हम उसको पाने आए हैं।।
अब पद अनर्घ पाने हेतू, यह मनहर अर्घ्य चढ़ाते हैं।
निर्वाण भूमियाँ हैं पावन, हम सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिने अनर्घ पद प्राप्ताय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस्वती का अर्घ्य

शुभ महाशक्ति की पुंज द्रव्य, उससे यह अर्घ्य बनाए हैं।
पाने अनर्घ पद अविनाशी, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।।
जिनवर की वाणी जिनवाणी, को भाव सहित हम ध्याते हैं।
जागे अन्तर में ज्ञान विशद, हम सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यैः ! अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सप्तर्षि का अर्घ्य

मन वचन काय हो अन्तर्मुख, विषयों से मन अब हट जाए।
शुभ पद अनर्घ्य पाने हेतू, यह अर्घ्य बनाकर हम लाए।।
हम सप्त ऋषी की पूजा कर, अपना सौभाग्य जगाएँगे।
अब छोड़ 'विशद' संसार वास, सीधे शिवपुर को जाएँगे।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चारण-ऋद्धिधारी श्री मन्व-स्वरमन्व-निचय-सर्वसुन्दर जयवान-विनयलालस-जयमित्र सप्त ऋषिभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चा.च. आचार्य श्री शांतिसागरजी महाराज का अर्घ्य

पद अनर्घ्य की प्राप्ती हेतु, अर्घ्य बनाकर लाये हैं।
गुरुवर दो सामर्थ्य हमें हम, चरण शरण में आये हैं।।
शांति सिन्धु दो शांति हमें, हम शांती पाने आये हैं।
विशद भाव से पद पंकज में, अपना शीष झुकाये हैं।।

ॐ ह्रूँ चा.च. आचार्य 108 श्री शांतिसागर यतिवरेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्य 108 श्री विमलसागरजी महाराज का अर्घ्य

हे ज्ञान मूर्ति ! करुणा निधान, हे धर्म दिवाकर ! करुणाकर ।
हे तेज पुञ्ज ! हे तपोमूर्ति !, सन्मार्ग दिवाकर रत्नाकर।।
विमल सिंधु के विमल चरण, से करुणा के झरने झरते ।
गुरु अष्ट गुणों की सिद्धि हेतु, यह अर्घ्य समर्पण हम करते ।।

ॐ ह्रूँ सन्मार्ग दिवाकर वात्सल्य रत्नाकर धर्म प्रणेता आचार्य श्री विमलसागर यतिवरेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्य 108 श्री विरागसागरजी महाराज का अर्घ्य

जल चन्दन के कलश थाल में, अक्षत पुष्प सजाये हैं।
चरुवर दीप धूप फल लेकर, अर्घ चढ़ाने आये हैं ।।
मन मंदिर में मेरे गुरुवर, हमने तुम्हें बसाया है ।
विराग सिन्धु के श्री चरणों में, अपना शीश झुकाया है।।

ॐ ह्रूँ प्रज्ञा श्रमण बालयति प.पू. आचार्य श्री विरागसागर यतिवरेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्य 108 श्री भरतसागरजी महाराज का अर्घ्य

जल चन्दन के कलश मनोहर, अक्षत पुष्प चरू लाये।
दीप धूप अरु फल को लेकर, अर्घ्य चढ़ाने हम आये।।
हृदय कमल में राजें गुरुवर, सुन्दर सुमन बिछाते है।
भरत सिंधु के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रूँ बालयोगी प्रशान्त मूर्ति आचार्य 108 श्री भरतसागर यतिवरेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्य 108 श्री विशदसागरजी महाराज का अर्घ्य

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर, थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर ले, मन में भाव बनाये हैं।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें, गुरु चरणों में सिर धरते हैं।।

ॐ ह्रूँ क्षमामूर्ति आचार्य 108 श्री विशदसागरजी यतिवरेभ्यो: अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

समुच्चय महा–अर्घ्य

पूज रहे अरहंत देव को, और पूजते सिद्ध महान्।
आचार्योपाध्याय पूज्य लोक में, पूज्य रहे साधू गुणवान।।
कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्यालय, चैत्य पूजते मंगलकार।
सहस्रनाम कल्याणक आगम, दश विध धर्म रहा शुभकार।।
सोलहकारण भव्य भावना, अतिशय तीर्थक्षेत्र निर्वाण।
बीस विदेह के तीर्थंकर जिन, 'विशद' पूज्य चौबिस भगवान।।
ऊर्जयन्त चम्पा पावापुर, श्री सम्मेद शिखर कैलाश।
पञ्चमेरु नन्दीश्वर पूजें, रत्नत्रय में करने वास।।
मोक्षशास्त्र को पूज रहे हम, बीस विदेहों के जिनराज।
महा अर्घ्य यह नाथ ! आपके, चरण चढ़ाने लाए आज।।

दोहा– जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल साथ।
सर्व पूज्य पद पूजते, चरण झुकाकर माथ।।

ॐ ह्रीं श्री भावपूजा भाववंदना त्रिकालपूजा त्रिकालवंदना करे करावे भावना भावे श्री अरहंतजी सिद्धजी आचार्यजी उपाध्यायजी सर्वसाधुजी पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः प्रथमानुयोग–करणानुयोग–चरणानुयोग–द्रव्यानुयोगेभ्यो नमः। दर्शन–विशुद्धयादिषोडशकारणेभ्यो नमः। उत्तम क्षमादि दशलक्षण धर्मेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन–सम्यग्ज्ञान–सम्यक्चारित्रेभयो नमः। जल के विषै, थल के विषै, आकाश के विषै, गुफा के विषै, पहाड़ के विषै, नगर–नगरी विषै, ऊर्ध्व लोक मध्य लोक पाताल लोक विषै विराजमान कृत्रिम अकृत्रिम जिन चैत्यालय जिनबिम्बेभ्यो नमः। विदेहक्षेत्रे विद्यमान बीस तीर्थंकरेभ्यो नमः। पाँच भरत, पाँच ऐरावत, दश क्षेत्र संबंधी तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनबिम्बेभ्यो नमः। नंदीश्वर द्वीप संबंधी बावन जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। पंचमेरु संबंधी अस्सी जिन चैत्यालयेभ्यो नमः। सम्मेदशिखर, कैलाश, चंपापुर, पावापुर, गिरनार, सोनागिर, राजगृही, मथुरा आदि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबद्री, मूढ़बद्री, हस्तिनापुर, चंदेरी, पपोरा, अयोध्या, शत्रुञ्जय, तारङ्गा, चमत्कारजी, महावीरजी, पदमपुरी, तिजारा, विराटनगर, खजुराहो, श्रेयांशगिरि, मक्सी पार्श्वनाथ, चंवलेश्वर आदि अतिशय क्षेत्रेभ्यो नमः, श्री चारण ऋद्धिधारी सप्तपरमर्षिभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं श्रीमन्तं भगवन्तं कृपालसंतं श्री वृषभादि महावीर पर्यंत चतुर्विंशतितीर्थंकर परमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्य खंडे .... देश.... प्रान्ते.... नाम्नि नगरे.... मासानामुत्तमे .... मासे शुभ पक्षे .... तिथौ .... वासरे .... मुनि आर्यिकानां श्रावक–श्राविकानां सकल कर्मक्षयार्थं अनर्घ पद प्राप्तये संपूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिपाठ भाषा

(शम्भू छंद)

चन्द्र समान सुमुख है जिनका, शील सुगुण संयम धारी।
लज्जित करते नयन कमल दल, सहस्राष्ट लक्षण धारी।।
द्वादश मदन चक्री हो पंचम, सोलहवें तीर्थंकर आप।
इन्द्र नरेन्द्रादी से पूजित, जग का हरो सकल संताप।।
सुरतरु छत्र चँवर भामण्डल, पुष्प वृष्टि हो मंगलकार।
दिव्य ध्वनि सिंहासन दुन्दुभि, प्रातिहार्य ये अष्ट प्रकार।।
शांतिदायक हे शांती जिन !, श्री अरहंत सिद्ध भगवान।
संघ चतुर्विध पढ़ें सुनें जो, सबको कर दो शांति प्रदान।।
इन्द्रादी कुण्डल किरीटधर, चरण कमल में पूजें आन।
श्रेष्ठ वंश के धारी हे जिन !, हमको शांती करो प्रदान।।
संपूजक प्रतिपालक यतिवर, राजा प्रजा राष्ट्र शुभ देश।
'विशद' शांति दो सबको हे जिन !, यही हमारा है उद्देश्य।।
होय सुखी नरनाथ धर्मधर, व्याधी न हो रहे सुकाल।
जिन वृष धारे देश सौख्यकर, चौर्य मरी न हो दुष्काल।।

(चाल छन्द)

जिनघाती कर्म नशाए, कैवल्य ज्ञान प्रगटाए।
हे वृषभादिक जिन स्वामी, तुम शांती दो जगनामी।।

हो शास्त्र पठन शुभकारी, सत्संगति हो मनहारी।
सब दोष ढ़ाँकते जाएँ, गुण सदाचार के गाएँ।।
हम वचन सुहित के बोलें, निज आत्म सरस रस घोलें।
जब तक हम मोक्ष न जाएँ, तब तक चरणों में आएँ।।
तब पद मम हिय वश जावें, मम हिय तव चरण समावें।
हम लीन चरण हो जाएँ, जब तक मुक्ती न पाएँ।।

दोहा- वर्ण अर्थ पद मात्र में, हुई हो कोई भूल।
क्षमा करो हे नाथ सब, भव दुख हों निर्मूल।।
चरण शरण पाएँ 'विशद', हे जग बन्धु जिनेश।
मरण समाधी कर्म क्षय, पाएँ बोधि विशेष।।

❋❋❋

विसर्जन पाठ

जाने या अन्जान में, लगा हो कोई दोष।
हे जिन ! चरण प्रसाद से, होय पूर्ण निर्दोष।।
आह्वानन पूजन विधि, और विसर्जन देव।
नहीं जानते अज्ञ हम, कीजे क्षमा सदैव।।
क्रिया मंत्र द्रवहीन हम, आये लेकर आस।
क्षमादान देकर हमें, रखना अपने पास।।
सुर-नर-विद्याधर कोई, पूजा किए विशेष।
कृपावन्त होके सभी, जाएँ अपने देश।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

आशिका लेने का पद

दोहा- लेकर जिन की आशिका, अपने माथ लगाय।
दुख दरिद्र का नाश हो, पाप कर्म कट जाय।।

(कायोत्सर्ग करें)

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र मौजमाबाद चालीसा

दोहा- पञ्च परमेष्ठी हैं तथा, तीर्थंकर चौबीस।
देव-शास्त्र-गुरु के चरण, झुका रहे हम शीश।।
जयपुर जिला में श्रेष्ठ है, तीर्थ मौजमाबाद।
चालीसा गाते विशद, हृदय जगे आह्लाद।।

चौपाई

प्रभु आकाश अनन्त बताया, लोक मध्य में जिसके गाया।।1।।
छह द्रव्यों संयुत शुभकारी, भरा हुआ है मंगलकारी।।2।।
जम्बूद्वीप मध्य में सोहे, मेरु मध्य में मन को मोहे।।3।।
सप्त क्षेत्र जिसमें बतलाए, भरत क्षेत्र दक्षिण में आए।।4।।
मध्य में आर्य खण्ड शुभ जानो, आर्य सभ्यता जिसमें मानो।।5।।
भरत क्षेत्र है जिसमें भाई, भारत देश रहा सुखदायी।।6।।
राजस्थान प्रान्त शुभ गाया, जयपुर जिला श्रेष्ठ बतलाया।।7।।
तीर्थ मौजमाबाद कहाए, दो भौंयरों से जाना जाए।।8।।
मानसिंह राजा कहलाए, जयपुर रियासत के जो आए।।9।।
नानू लाल गोधा जी गाए, जो प्रधान आमात्य कहाए।।10।।
जो मन्दिर निर्माण कराए, तीन शिखर जिसमें बनवाए।।11।।
कला पूर्ण है जो मनहारी, वैभव दर्शाया है भारी।।12।।
वेदी में जिनराज बिठाए, अजितनाथ मूलनायक गाए।।13।।
वेदी पे गुम्बद मन मोहे, कलापूर्ण चित्रावलि सोहे।।14।।
तीर्थंकर जिन की प्रतिमाएँ, कई विशाल महिमा दिखलाएँ।।15।।
ऋषभ अजित सम्भव जिन सोहें, छोटे भौंयरे में मन मोहे।।16।।
बड़े भौंयरे में शुभकारी, चौबिस प्रतिमाएँ मनहारी।।17।।
वेदी के पीछे को जाएँ, जहाँ शोभती कई प्रतिमाएँ।।18।।
नन्दीश्वर भी है मनहारी, श्वेत वर्ण का मंगलकारी।।19।।

पार्श्वनाथ खड़गासन गाए, चौबीसी संयुक्त कहाए।।20।।
दो सौ पच्चिस जिन प्रतिमाएँ, वीतरागता को दर्शाए।।21।।
है जिनबिम्ब श्रेष्ठ मनहारी, जो है भारी अतिशयकारी।।22।।
मुस्लिम शासक थे जब भाई, जो थे भारी आताताई।।23।।
सेना लेकर यहाँ पे आए, भारी जो आक्रमण कराए।।24।।
दीवालों की किए खुदाई, द्वार तोड़ ना पाए भाई।।25।।
क्षेत्रपाल रक्षक बन आए, भारी जो गोले बरसाए।।26।।
देव कई तलघर में आते, भक्तिभाव से महिमा गाते।।27।।
अखण्ड ज्योति जलती मनहारी, छोटे भौंयरे में शुभकारी।।28।।
दूर-दूर से यात्री आते, भक्त सभी इच्छित फल पाते।।29।।
दुखियाँ निज सौभाग्य जगाते, रोगी अपने रोग मिटाते।।30।।
निर्धन धन सम्पत्ती पावें, पुत्रहीन सुत गोद खिलावें।।31।।
मानस्तम्भ सामने आए, मद वालों का मान गलाए।।32।।
गाँव में छोटा मंदिर आए, काँच का मंदिर जो कहलाए।।33।।
मूलनायक जिसमें मनहारी, नेमीनाथ हैं मंगलकारी।।34।।
भौंयरा वहाँ पे भी है भाई, जिसमें वेदी है अतिशायी।।35।।
महावीर वेदी में सोहें, श्वेत वर्ण के मन को मोहें।।36।।
सात वेदियों में जिन गाए, जिनके दर्शन मन को भाए।।37।।
गाँव के बाहर नसियाँ जानो, वो भी दर्शनीय है मानो।।38।।
बनी छतरियाँ वहाँ पे भाई, वह भी पावन हैं अतिशायी।।39।।
'विशद' सिन्धु चालीसा गाते, जिन पद सादर शीश झुकाते।।40।।

दोहा- चालीसा चालीस दिन, पढ़ें-सुने जो लोग।
धन परिजन सौभाग्य का, पावें वे संयोग।।
श्रद्धा से जिन अर्चना, करें भाव से जाप।
उनके कट जाते 'विशद', जन्म-जन्म के पाप।।

जाप्य : ॐ ह्रीं श्री अतिशय क्षेत्र मौजमाबाद स्थित सर्व जिनबिम्बेभ्यो नमः।

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र मौजमाबाद स्थित मूलनायक 1008 श्री अजितनाथ जी का चालीसा

दोहा- नमन मेरा अरिहंत को, सिद्धों को भी साथ।
आचार्य उपाध्याय साधु को, झुका रहे हम माथ।।
जिनवाणी जिनधर्म जिन, चैत्यालय शुभकार।
मौजमाबाद के अजित जिन, को वन्दन शत् बार।।

चौपाई

जय-जय अजितनाथ जिन स्वामी, हो स्वामी तुम अन्तर्यामी।।1।।
तुमने सर्व चराचर जाना, जैसा है उस रूप बखाना।।2।।
देवों के तुम देव कहाते, सारे जग में पूजे जाते।।3।।
विजय अनुत्तर है शुभकारी, चयकर आये हैं त्रिपुरारी।।4।।
जम्बूद्वीप लोक में गाया, भरत क्षेत्र उसमें बतलाया।।5।।
जिसमें कौशल देश बखाना, नगर अयोध्या अतिशय माना।।6।।
जितशत्रु राजा कहलाए, रानी विजया देवी पाए।।7।।
ज्येष्ठ अमावस को जिन स्वामी, गर्भ में आये अन्तर्यामी।।8।।
गर्भ नक्षत्र रोहिणी गाया, ब्रह्ममुहूर्त श्रेष्ठ बतलाया।।9।।
माघ शुक्ल दशमी शुभकारी, जन्म लिए जिनवर अविकारी।।10।।
तभी इन्द्र का आसन डोला, लोगों ने जयकारा बोला।।11।।
आसन से तब उठकर आया, सप्त कदम चल शीश झुकाया।।12।।
ऐरावत पर चढ़कर आया, साथ में शचि को अपने लाया।।13।।
मेरूगिरि पर लेकर जावें, पाण्डुक शिला पर न्हवन करावें।।14।।
इन्द्र ने पद में शीश झुकाया, पग में गज लक्षण शुभ पाया।।15।।
हाथ अठारह सौ ऊँचाई, अजितनाथ के तन की गाई।।16।।
लाख बहत्तर पूरब भाई, जिनवर ने शुभ आयू पाई।।17।।
उल्कापात देखकर स्वामी, दीक्षा धारे अन्तर्यामी।।18।।

माघ शुक्ल नौमी दिन गाया, संध्याकाल का समय बताया।।19।।
देव पालकी सुप्रभ लाए, उसमें प्रभु जी को बैठाए।।20।।
ले उद्यान सहेतुक आए, सप्त वर्ण तरु तल पहुँचाएँ।।21।।
केशलुँच कर वस्त्र उतारे, सहस्र मुनि सह दीक्षा धारे।।22।।
बेलोपवास किए जिन स्वामी, ध्यान किए निज अन्तर्यामी।।23।।
ब्रह्मदत्त पड़गाहन कीन्हें, क्षीर खीर आहार जो दीन्हें।।24।।
पूर्वांग हीन एक लख स्वामी, तप धारे मुक्ति पथगामी।।25।।
पौष शुक्ल एकादशी पाए, केवलज्ञान प्रभु प्रगटाए।।26।।
धनपति स्वर्ग से चलकर आया, समवशरण अनुपम बनवाया।।27।।
साढ़े ग्यारह योजन जानो, छियालिस कोष श्रेष्ठ पहिचानो।।28।।
प्रातिहार्य से युक्त कहाए, पद्मासन से शोभा पाए।।29।।
नब्बे गणधर प्रभु के गाए, प्रथम केशरी सिंह कहाए।।30।।
एक लाख मुनि संख्या भाई, श्रेष्ठ यक्षिणी अजिता गाई।।31।।
महायज्ञ शुभ यक्ष बताया, श्रोता चक्री सागर कहाया।।32।।
तीन लाख श्रावक शुभ जानो, पाँच लाख श्राविकाएँ मानो।।33।।
प्रभु सम्मेद शिखर पर आए, कूट सिद्धवर अतिशय पाये।।34।।
योग निरोध प्रभु ने पाया, एक माह का समय बताया।।35।।
चैत्र शुक्ल पाँचे शुभ गाई, प्रातः तुमने मुक्ती पाई।।36।।
कायोत्सर्गासन जिन पाए, सहस मुनि सहमोक्ष सिधाए।।37।।
नगर मौजमाबाद में भाई, अजितनाथ सोहें शिवदायी।।38।।
प्रतिमाएँ कई मंगलकारी, रही लोक में अतिशयकारी।।39।।
जिनका हम आलम्बन पाते, पद में सादर शीश झुकाते।।40।।

सोरठा– पढ़े भाव के साथ, चालीसा चालीस दिन।
चरण झुकाए माथ, सुख–शांति सौभाग्य हो।।
पाये धन सन्तान, दीन दरिद्री होय जो।
'विशद' मिले सम्मान, नाम वंश यश भी बढ़े।।

जाप्य : ॐ ह्रीं अतिशय क्षेत्र मौजमाबाद स्थित श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमः।

श्री नेमीनाथ चालीसा

दोहा– अरहंतादिक देव नव, का करके शुभ जाप।
चालीसा पढ़ते विशद, कट जाएँ सब पाप।।
ग्राम मौजमाबाद में, नेमिनाथ भगवान।
छोटे मंदिर में रहे, करते हम गुणगान।।

(चौपाई छन्द)

जय जय नेमिनाथ जिन स्वामी, करुणाकर हे अन्तर्यामी।।1।।
अपराजित से चयकर आए, शौरीपुर नगरी शुभ पाए।।2।।
कार्तिक शुक्ला षष्ठी जानो, गर्भ कल्याणक प्रभु का मानो।।3।।
राजा समुद्र विजय के प्यारे, शिवा देवी के राज दुलारे।।4।।
श्रावण शुक्ला षष्ठी स्वामी, जन्म लिए प्रभु अन्तर्यामी।।5।।
अहनद बाजे देव बजाए, सुर–नर पशु भारी हर्षाए।।6।।
इन्द्र स्वर्ग से चलकर आया, पाण्डुक शिला पे न्हवन कराया।।7।।
शंख चिह्न पंग में शुभ गाया, नेमिनाथ सुर नाम बताया।।8।।
आयू सहस्र वर्ष की पाई, चालिस हाथ रही ऊँचाई।।9।।
श्याम वर्ण तन का शुभकारी, प्रभुजी पाए मंगलकारी।।10।।
पैर की उँगली से जिन स्वामी, चक्र चलाए शिवपथ गामी।।11।।
नाक के स्वर से शंख बजाया, जिससे तीन लोक थर्राया।।12।।
कृष्ण तभी मन में घबड़ाए, शादी की तब बात चलाए।।13।।
जूनागढ़ की राजकुमारी, नाम रहा राजुल सुकुमारी।।14।।
हुई ब्याह की तब तैय्यारी, हर्षित थे सारे नर–नारी।।15।।
श्रीकृष्ण तब युक्ति लगाए, मांसाहारी नृप बुलवाए।।16।।
समुद्र विजय अति हर्ष मनाए, ले बरात जूनागढ़ आए।।17।।
नेमिनाथ दूल्हा बन आए, छप्पन कोटि बराती लाए।।18।।
बाड़े में जब पशू रंभाए, करुणा से नेमी भर आए।।19।।

पूछा क्यों ये पशू बंधाएँ, श्रीकृष्ण यह बात सुनाए।।20।।
इन पशुओं का मांस पकेगा, इन लोगों को हर्ष मनेगा।।21।।
नेमिनाथ का मन घबड़ाया, करुणा भाव हृदय में छाया।।22।।
उनके मन वैराग्य समाया, पशुओं का बन्धन खुलवाया।।23।।
रथ को मोड़ चले गिरनारी, मन से होकर के अविकारी।।24।।
कंगन तोड़े वस्त्र उतारे, नेमीश्वर जी दीक्षा धारे।।25।।
श्रावण शुक्ला षष्ठी पाए, प्रभुजी संयम को अपनाए।।26।।
एक सहस नृप दीक्षा धारे, द्वारावति में लिए अहारे।।27।।
श्रावण सुदि नौमी दिन गाया, वरदत्त नृप ने अवसर पाया।।28।।
अश्विन सुदि एकम को स्वामी, केवलज्ञान पाए जगनामी।।29।।
समवशरण तव देव रचाए, प्रभु की जय-जयकार लगाए।।30।।
ग्यारह गणधर प्रभु के गाए, गणधर प्रथम वरदत्त कहाए।।31।।
चित्रा शुभ नक्षत्र कहाया, मेघश्रृंग तरु का तल पाया।।32।।
सर्वाह्ण यक्ष प्रभू का भाई, यक्षी कुष्मांडनी कहलाई।।33।।
ऋषी अठारह सहस बताए, चार सौ पूरब धारी गाए।।34।।
ग्यारह सहस आठ सौ भाई, शिक्षक बतलाए शिवदायी।।35।।
पन्द्रह सौ थे अवधिज्ञानी, डेढ़ सहस थे केवलज्ञानी।।36।।
ग्यारह सौ विक्रिया के धारी, नौ सौ विपुलमती अनगारी।37।।
आठ सौ वादी मुनिवर गाये, पाँच सौ छत्तिस संग शिव पाए।।38।।
अषाढ़ शुक्ला साते जिन स्वामी, पद्मासन से शिवपद गामी।।39।।
उर्जयन्त से शिवपद पाए, 'विशद' चरण में शीश झुकाएँ।।40।।

सोरठा- चालीसा चालीस, पढ़े भाव से जो 'विशद'।
चरण झुकाकर शीश, अर्चा करते जीव जो।।
शांति में हो वास, रोग-शोक चिन्ता मिटे।
पाप शाप हो नाश, विशद मोक्ष पदवी मिले।।

जाप्य : ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः।

श्री भक्तामर चालीसा

दोहा- भक्तामर स्तोत्र यह, आदिनाथ के नाम।
मानतुंग मुनि ने लिखा, करके चरण प्रणाम।।
सुख-शांति सौभाग्य हो, पढ़ने से स्तोत्र।
बाधाएँ सब दूर हों, बहे धर्म का स्रोत।।

(चौपाई)

भक्तामर स्तोत्र निराला, सब कष्टों को हरने वाला।।1।।
मानतुंग की रचना प्यारी, कहलाए जो संकटहारी।।2।।
हरेक काव्य है महिमाशाली, भक्ती कभी न जाए खाली।।3।।
एक एक अक्षर मंत्र कहाये, पाठक सुख-सम्पत्ती पाए।।4।।
सदी ग्यारहवी जानो भाई, उज्जैनी नगरी सुखदायी।।5।।
जिसका प्रान्त मालवा गाया, विद्वानों का केन्द्र बताया।।6।।
राजाभोज वहाँ का जानो, नौ मंत्री जिसके पहिचानो।।7।।
कालीदास प्रथम कहलाया, सेठ सुदत्त वहाँ जब आया।।8।।
पुत्र मनोहर जिसका जानो, पुस्तक हाथ लिए था मानो।।9।।
राजा ने पूछा हे भाई, पुस्तक कौन सी तुमने पाई।।10।।
नाम माला तब नाम बताए, लेखक कवी धनंजय गाए।।11।।
कवि को राजा ने बुलवाया, खुश होके सम्मान कराया।।12।।
कृती नाम माला है प्यारी, राजा किए प्रशंसा भारी।।13।।
गुरु के आशिष से यह पाया, मानतुंग को गुरु बतलाया।।14।।
कालीदास को नहीं सुहाया, कविवर को मूरख बतलाया।।15।।
शास्त्रार्थ कर ले तो जानें, हम इसकी महिमा पहिचानें।।16।।
दूत मुनी के पास भिजाया, मुनिवर को संदेश सुनाया।।17।।
सभा बीच मुनिवर न आए, चार बार संदेश भिजाए।।18।।
कालिदास को गुस्सा आया, उसने राजा को भड़काया।।19।।

क्रोध नृपति के मन में आया, सैनिक को आदेश सुनाया ।।20 ।।
बन्दी बना यहाँ पर लाओ, राजसभा में पेश कराओ ।।21 ।।
दूत उठाकर मुनि को लाए, मुनि उपसर्ग मानकर आए ।।22 ।।
मौन धार लीन्हें तब स्वामी, जैन धर्म के शुभ अनुगामी ।।23 ।।
मुनिवर को वह कैद कराए, अड़तालिस ताले लगवाए ।।24 ।।
नर–नारी तब शोक मनाए, दुख के आँसू खूब बहाए ।।25 ।।
मुनिवर मन में समता लाए, तीन दिनों का समय बिताए ।।26 ।।
आदिनाथ को मुनिवर ध्याये, भक्तामर स्तोत्र रचाये ।।27 ।।
मुनि के तन में बँधने वाले, टूट गयीं जंजीरे ताले ।।28 ।।
आपों आप खुले सब द्वारे, द्वारपाल सब लगा के हारे ।।29 ।।
पास में राजा के वह आए, जाकर सारा हाल सुनाए ।।30 ।।
राजा तभी वहाँ पर आया, मुनिवर को फिर कैद कराया ।।31 ।।
मुनिवर जी फिर ध्यान लगाए, ताले फिर से टूटे पाए ।।32 ।।
राजा तब मन में घबराया, कालिदास को पास बुलाया ।।33 ।।
कालिदास ने शक्ति लगाई, देवि कालिका भी प्रगटाई ।।34 ।।
देवी चक्रेश्वरी तब आई, देख कालिका तब घबराई ।।35 ।।
महिमा जैन धर्म की गाई, सबने तब जयकार लगाई ।।36 ।।
जैन धर्म लोगों ने धारा, धर्म का है बश यही सहारा ।।37 ।।
'विशद' भक्ति की है बलिहारी, पुण्यवान होवे शुभकारी ।।38 ।।
भाव सहित भक्तामर गाएँ, मानतुंग सम भक्ति जगाएँ ।।39 ।।
अतिशयकारी पुण्य कमाएँ, अनुक्रम से फिर मुक्ती पाएँ ।।40 ।।

दोहा– भक्तामर स्तोत्र से, भारी अतिशय होय।
नाना भाषा में रचा, पढ़े भाव से कोय।।
आधि व्याधि नाशक कहा, चालीसा स्तोत्र।
मंत्रों से परिपूर्ण है, 'विशद' धर्म का स्रोत।।

जाप– ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं ऐम् अर्हं श्री वृषभनाथ तीर्थंकराय नमः।

श्री नवग्रह शांति चालीसा

दोहा– नव देवों के पद युगल, वन्दन बारम्बार।
अर्चा करते भाव से, पाने भवदधि पार।।
चालीसा नवग्रह का यहाँ, पढ़ते योग सम्हार।
सुख–शांति सौभाग्य पा, करें आत्म उद्धार।।

(चौपाई)

नवग्रह नभ में रहने वाले, सारे जग से रहे निराले ।।1 ।।
रवि शशि मंगल बुध गुरु जानो, शुक्र शनि राहु केतु मानो ।।2 ।।
कर्म असाता उदय में आए, तब ये नवग्रह खूब सताएँ ।।3 ।।
कभी व्याधि लेकर के आते, कभी उदर पीड़ा पहुँचाते ।।4 ।।
आँख कान में दर्द बढ़ाते, मन में बहु बेचैनी लाते ।।5 ।।
कभी होय व्यापार में हानी, कभी करें नौकर मनमानी ।।6 ।।
कभी चोर चोरी को आवें, छापा मार कभी आ जावें ।।7 ।।
कभी कलह घर में बढ़ जावे, कभी देह में रोग सतावे ।।8 ।।
बेटा–बेटी कही न माने, अपने अपना न पहिचाने ।।9 ।।
प्राणी संकट में पड़ जावे, शांति की ना राह दिखावे ।।10 ।।
ऐसे में भी प्रभु की भक्ति, हर कष्टों से देवे मुक्ती ।।11 ।।
ग्रहारिष्ट रवि जिसे सताए, पद्म प्रभू को वह नर ध्याये ।।12 ।।
जिन्हें चन्द्र ग्रह अधिक सताए, चन्द्र प्रभु को भाव से ध्याये ।।13 ।।
मंगल ग्रह भी जिन्हें सताए, वासुपूज्य जिन शांति दिलाएँ ।।14 ।।
ग्रहारिष्ट बुध पीड़ा हारी, अष्ट जिनेन्द्र रहे शुभकारी ।।15 ।।
विमलानन्त धर्म अर पाए, शांति कुन्थु नमि वीर कहाए ।।16 ।।
गुरु अरिष्ट ग्रह शांति प्रदायी, अष्ट जिनेन्द्र रहे सुखदायी ।।17 ।।
ऋषभाजित सम्भव अभिनन्दन, सुमति सुपार्श्व विमल पद वंदन ।।18 ।।
तीर्थंकर शीतल जिन स्वामी, गुरु ग्रह शांति कारक नामी ।।19 ।।
शुक्र अरिष्ट शांति कर गाए, पुष्पदन्त जिनराज कहाए ।।20 ।।

शनि अरिष्ट ग्रह शांती दाता, श्री मुनिसुव्रत रहे विधाता ।।21 ।।
राहू ग्रह नाशक कहलाए, नेमिनाथ तीर्थंकर गाए ।।22 ।।
मल्लि पार्श्व का ध्यान जो करते, केतू ग्रह की बाधा हरते ।।23 ।।
जो चौबिस तीर्थंकर ध्याए, जीवन में वह शांति उपाए ।।24 ।।
गगन गमन वह करते भाई, मानव को होते दुखदायी ।।25 ।।
जन्म लग्न राशी को पाए, मानव को ग्रह बड़ा सताए ।।26 ।।
ज्ञानी जन उस ग्रह के स्वामी, तीर्थंकर को भजते नामी ।।27 ।।
ग्रह हारी दिन जिन को ध्याएँ, पूजा कर सौभाग्य जगाएँ ।।28 ।।
करें आरती मंगलकारी, विशद भाव से शुभ मनहारी ।।29 ।।
चालीसा चालिस दिन गाए, मंत्र जाप भी करते जाएँ ।।30 ।।
मंगलमयी विधान रचाएँ, शांति भाव से ध्यान लगाएँ ।।31 ।।
अन्तिम श्रुत केवली गाए, भद्रबाहु स्वामी कहलाए ।।32 ।।
नवग्रह शांति स्तोत्र रचाए, चौबीसों जिनवर को ध्याए ।।33 ।।
शान्त्यर्थ शुभ शांतिधारा, भवि जीवों को बने सहारा ।।34 ।।
नौ तीर्थंकर नवग्रह हारी, कहलाए हैं मंगलकारी ।।35 ।।
चन्द्रप्रभु वासुपूज्य बताए, मल्ली वीर सुविधि जिन गाए ।।36 ।।
शीतल मुनिसुव्रत जिन स्वामी, नेमि पार्श्व जिन अन्तर्यामी ।।37 ।।
नवग्रह शांती जिन को ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते ।।38 ।।
'विशद' भावना हम ये भाएँ, सुख-शांती सौभाग्य जगाएँ ।।39 ।।
हमें सहारा दो हे स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी ।।40 ।।

दोहा- चालीसा चालीस दिन, पढ़ें भक्ति से लोग।
रोग-शोक क्लेशादि का, रहे कभी न योग ।।
नवग्रह शांती के लिए, ध्याते जिन चौबीस।
सुख-शांती आनन्द हो, 'विशद' झुकाते शीश ।।

जाप्य : ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा नमः सर्व ग्रहारिष्ट शान्तिं कुरु-कुरु स्वाहा।

भक्तामर स्तोत्र भाषा

-आचार्य श्री विशदसागरजी

भक्त चरण में झुकते आके, मुकुट मणी की कांति महान।
पाप तिमिर सब नाशनहारी, दिव्य दिवाकर सम्यक् ज्ञान ।।
भव समुद्र में पतित जनों को, देते हैं जो आलम्बन।
आदिनाथ के चरण कमल में, करते हम शत्-शत् वन्दन ।।1 ।।
सकल तत्त्व के ज्ञाता अनुपम, सकल बुद्धि पटु धी धारी।
इन्द्रराज भी स्तुति करता, नत होकर जन मन हारी ।।
हैं स्तुत्य प्रथम जिन स्वामी, महिमा हम भी गाते हैं।
जयकारा करते हैं चरणों, सादर शीश झुकाते हैं ।।2 ।।
मन्द बुद्धि हम स्तुति करते, नहीं जरा भी शर्माते।
विज्ञ जनों से अर्चित हे प्रभु, ज्ञानी आप कहे जाते ।।
जल में चन्द्र बिम्ब की छाया, पाने बालक जिद करता।
सत्य स्वरूप जानने वाला, ज्ञानी कर्मों से डरता ।।3 ।।
चन्द्र कांति से बढ़कर हे जिन !, आप धवल कांती पाए।
हे गुणसागर ! महिमा गाने, में सुरगुरु भी थक जाए ।।
नक्र चक्र मगरादिक होवें, प्रलय काल की चले बयार।
कौन भुजाओं से सागर को, कर सकता है बोलो पार ।।4 ।।
शक्ति नहीं भक्ती से प्रेरित, हो स्तुति करने आए।
नाथ ! आपके दर्शन करके, मन ही मन में हर्षाए ।।
निज शिशु की रक्षा हेतू मृगि, अहो विचार कहाँ करती।
जाकर मृगपति के सम्मुख वह, रक्षा कर संकट हरती ।।5 ।।
अल्प ज्ञानि हम ज्ञानी जन से, हास्य कराते हैं इक मात्र।
भक्ति आपकी प्रेरित करती, अतः भक्ति के हैं हम पात्र ।।
आम्र वृक्ष पर वौर आएँ तब, कोयल करे मधुर शुभगान।
नाथ आपकी भक्ती करती, प्रेरित करने को गुणगान ।।6 ।।
स्तुति से हे नाथ ! आपकी, कट जाते चिर संचित पाप।
शीघ्र भाग जाते हैं क्षण में, जरा नहीं रहता संताप ।।

तीन लोक में भ्रमर सरीखा, तम छाया भारी घन घोर।
पूर्ण नाश हो जाता क्षण में, सूर्योदय होते ही भोर।।7।।
हूँ मतिमान आपकी फिर भी, शुभ स्तुति आरम्भ करी।
चित्त हरण करती जन-जन का, भक्ति आपकी शांति भरी।।
कमल पत्र पर जल कण जैसे, मोती की उपमा पाए।
नाथ ! आपकी स्तुति जग में, सज्जन का मन हर्षाए।।8।।
प्रभु स्तोत्र आपका क्षण में, सारे दोष विनाश करे।
पुण्य कथा भी प्रभू आपकी, जन्म-जन्म के पाप हरे।।
सहस रश्मि वाला सूरज ज्यों, गगन में रहता है अतिदूर।
सागर में कमलों को देता, सूर्य प्रभा अपनी भरपूर।।9।।
त्रिभुवन तिलक आप हो स्वामी, सब जीवों के नाथ कहे।
सद्भक्तों को निज सम करते, इसमें क्या आश्चर्य रहे।।
धनी लोग स्वाश्रित को धन दे, कर लेते हैं स्वयं समान।
नहीं करे तो कौन कहेगा, स्वामी को हे नाथ ! महान।।10।।
नाथ ! आपका दर्शन करके, भक्त हृदय में होता हर्ष।
और नहीं सन्तोष कहीं है, बिना आपके करके दर्श।।
क्षीर सिन्धु का चन्द्र किरण सम, जो मानव करता जलपान।
कालोदधि का खारा पानी, कौन पियेगा हो अज्ञान।।11।।
हुआ आपके तन का स्वामी, जितने अणुओं से निर्माण।
उतने ही अणु थे धरती पर, शांत रागमय श्रेष्ठ महान।।
हे अद्वितीय शिरोमणी प्रभु, तीन लोक के आभूषण।
नहीं आपसा सुन्दर कोई, नहीं आपसा आकर्षण।।12।।
सुन्दर अनुपम मुख वाले जिन, सुर नर नाग नेत्रहारी।
तीन लोक की उपमा जीते, हे निर्ग्रन्थ ! भेष धारी।।
है कलंक से युक्त चन्द्रमा, उससे तुलना कौन करे।
हो पलास सा फीका दिन में, वही चन्द्रमा दीन अरे।।13।।
कला कलाओं से बढ़के है, पूर्ण चन्द्रमा कांतीमान।
तीन लोक में व्याप रहे हैं, प्रभु के गुण भी पूर्ण महान।।

जिन गुण विचरें तीन लोक में, जगन्नाथ का पा आधार।
कौन रोक सकता है उसको, किसको है इतना अधिकार।।14।।
नहीं डिगा पाई प्रभु का मन, हुईं देवियाँ भी लाचार।
इसमें क्या आश्चर्य है कोई, कामदेव ने मानी हार।।
प्रलय काल की वायू चलती, पर्वत भी गिर-गिर जाते।
हिलता नहीं सुमेरू फिर भी, ऐसी अचल शक्ति पाते।।15।।
धुआँ तेल बाती बिन दीपक, नाथ ! आप कहलाते हो।
तीनों लोक प्रकाशित करते, शिव पथ आप दिखाते हो।।
वायू ऐसी तेज चले कि, गिरि शिखर उड़-उड़ जाए।
एक अलौकिक दीप आप हो, कोई नहीं बुझा पाए।।16।।
उदय अस्त न होता जिसको, और न राहु ग्रस पाए।
तीनों लोक का ज्ञान आपका, एक साथ सब दिखलाए।।
घने मेघ ढक सकें कभी न, ना प्रभाव कम हो पाता।
महिमाशाली दिनकर चरणों, स्वयं आपके झुक जाता।।17।।
मोह महातम के नाशक प्रभु, सदा उदित रहते स्वामी।
राहु गम्य न मेघ से ढ़कते, हे शिवपथ ! के अनुगामी।।
अतुल कांतिमय रूप आपका, मुख मण्डल भी दमक रहा।
जगत शिरोमणि हे शशांक ! जिन, तुमसे जग ये चमक रहा।।18।।
मुख मण्डल जिन दिव्य तेजमय, अन्धकार का करे विनाश।
दिन में सूर्य और रात्री में, चन्द्र बिम्ब की फिर क्या आस।।
धान्य खेत में पके हुए शुभ, लहराएँ अतिशय अभिराम।
जल से भरे सघन मेघों का, रहा बताओ फिर क्या काम।।19।।
शोभित होता प्रभू आपका, स्वपर प्रकाशी केवल ज्ञान।
हरिहरादि देवों में वैसा, प्रकट नहीं हो सके प्रधान।।
महारत्न ज्योतिर्मय किरणों, वाला शुभ देखा जाता।
किरणाकुलित काँच क्या वैसी, उत्तम आभा को पाता।।20।।
हरिहरादि देवों का हमने, माना उत्तम अवलोकन।
नहिं सन्तोष प्राप्त करता है, बिना आपको देखे मन।।

तुम्हें देखने से हे स्वामी !, लाभ हुआ मुझको भारी।
भूला भटका चंचल मेरा, चित्त हुआ है अविकारी।।21।।
जहाँ सैकड़ों सुत को जनने, वाली सौ-सौ माताएँ।
मगर आपको जनने का, सौभाग्य श्रेष्ठ जननी पाएँ।।
सर्व दिशाएँ नक्षत्रों को, पाती ना कोई खाली।
पूर्ण प्रतापी सूरज को बस, पूर्व दिशा जानने वाली।।22।।
हे मुनियों के नाथ आपका, परम पुरुष करते गुणगान।
सूर्यकान्त सम तेजवंत हो, मृत्युञ्जय मेरे भगवान।।
नाथ ! आपको छोड़ कोई ना, शिवमारग दिखलाता है।
विशद आपको ध्याने वाला, मृत्युञ्जय हो जाता है।।23।।
आदिब्रह्म ईश्वर जगदीश्वर, एकानेक अनन्त मुनीश।
विजित योग अक्षय मकरध्वज, विमलज्ञान मय हे जगदीश !।।
जगन्नाथ जगतीपति आदिक, कहलाते हो हे वागीश !।
इत्यादिक नामों के द्वारा, जाने जाते हे योगीश !।।24।।
केवल ज्ञान बोधि को पाने, वाले आप कहाए बुद्ध।
त्रय लोकों के शोक हरणहर, शंकर आप कहाते शुद्ध।।
मोक्ष मार्ग दर्शाने वाले, आप विधाता कहे जिनेश।
धर्म प्रवर्तक हे पुरुषोत्तम !, और कौन होंगे अखिलेश।।25।।
तीन लोक के दुखहर्त्ता हे !, आदि जिनेश्वर तुम्हें नमन्।
भूमण्डल के आभूषण प्रभु, हे परमेश्वर तुम्हें नमन्।।
अखिलेश्वर हे तीन लोक के, तव पद बारम्बार नमन्।
भव सिन्धू के शासक अनुपम, भवि जीवों का चरण नमन्।।26।।
गुण सारे एकत्रित होकर, तुममें आन समाए हैं।
इसमें क्या आश्चर्य है कोई, आश्रय अन्य न पाए हैं।।
खोटे देवों के आश्रय से, गर्वित होकर रहते दोष।
नहीं आपकी ओर झाँकते, कभी स्वप्न में हे गुणकोष !।।27।।
तरु अशोक उन्नत है निर्मल, रत्न रश्मियाँ बिखराए।
सुन्दर रूप आपका मनहर, तरुवर का आश्रय पाए।।

ऊर्ध्वमुखी किरणें अम्बर में, तम को दूर भगाती हैं।
नीलांचल पर्वत से मानो, भव्य आरती गाती हैं।।28।।
रंग-बिरंगी किरणों वाला, सिंहासन अद्भुत छविमान।
उस पर कंचन काया वाले, शोभा पाते हैं भगवान।।
उच्च शिखर से उदयाचल के, सूर्य रश्मियाँ बिखराए।
किरण जाल का श्रेष्ठ चँदोवा, मानो आभा फैलाए।।29।।
शुभ्र चँवर ढुरते हैं अनुपम, कुन्द पुष्प सम आभावान।
दिव्य देह शोभा पाती है, स्वर्णाभासी कांतीमान।।
कनकाचल के उच्च शिखर से, मानो झरना झरता है।
अपनी शुभ्र प्रभा के द्वारा, मन मधुकर को हरता है।।30।।
चन्द्र कांति सम छत्र त्रय हैं, मणिमुक्ता वाले अभिराम।
सिर पर शोभित होते अनुपम, अतिशय दीप्तीमान ललाम।।
सूर्य रश्मियों का प्रताप जो, रोक रहे होके छविमान।
तीन लोक के ईश्वर अनुपम, कहे गये हो आप महान।।31।।
उच्च स्वरों में बजने वाली, करती सर्व दिशा में नाद।
तीन लोकवर्ति जीवों के, मन में लाती है आह्लाद।।
डंका पीट रही है अनुपम, हो सद्धर्म की जय-जयकार।
गगन मध्य भेरी बजती है, यश गाती है अपरम्पार।।32।।
गंधोदक की वृष्टी करते, देव चलाते मंद पवन।
संतानक मंदार नमेरू, कल्पतरू के श्रेष्ठ सुमन।।
सुन्दर पारिजात आदी के, ऊर्ध्वमुखी होकर गिरते।
पंक्तीबद्ध आदि जिनके ही, मानो दिव्य वचन खिरते।।33।।
तीन लोकवर्ती उपमाएँ, जो कहने में आती हैं।
तनभामण्डल के आगे वह, सब फीकी पड़ जाती हैं।।
कोटि सूर्य सम प्रखर दीप्ति है, फिर भी नहीं जरा आताप।
शीतल चन्द प्रभू के आगे, प्रभाहीन हों अपने आप।।34।।
स्वर्ग मोक्ष के दिग्दर्शक हैं, हे जिनेन्द्र ! तव दिव्य वचन।
तीन लोक में सत्य धर्म को, प्रगटाए सम्यक् दर्शन।।

दिव्य देशना सुनकर करते, भव्य जीव अपना उद्धार।
सुनकर विशद समझ लेते हैं, निज-निज भाषा के अनुसार।।35।।
चरणाम्बुज नख शोभित होते, नभ में जैसे स्वर्ण कमल।
कुमुद मुदित होकर सागर में, शोभा पाते चरण युगल।।
अभिवन्दन के योग्य चरण शुभ, प्रभुवर जहाँ-जहाँ धरते।
उनके पग तल दिव्य कमल की, देव श्रेष्ठ रचना करते।।36।।
धर्म देशना की बेला में, वैभव पाते जो तीर्थेश।
अन्य कुदेवों में वैसा कुछ, देखा गया नहीं लवलेश।।
घोर तिमिर का नाशक रवि जो, दिव्य रोशनी को पाता।
वैसा दिव्य प्रकाश नक्षत्रों, में भी क्या देखा जाता।।37।।
महामत्त गज के गालों से, बहे निरन्तर मद की धार।
जिस पर भौरों का समूह भी, करता हो अतिशय गुंजार।।
क्रोधाशक्त दौड़ता हाथी, जिसका रूप दिखे विकराल।
कभी नहीं कर सकता है प्रभु, तव भक्तों को वह बेहाल।।38।।
तीक्ष्ण नखों से फाड़ दिए हैं, गज के उन्नत गण्डस्थल।
गज मुक्ताओं द्वारा जिसने, पाट दिया हो अवनीतल।।
ऐसा सिंह भयानक होकर, कभी नहीं कर सकता वार।
चरण कमल का प्रभु आपके, जिसने बना लिया आधार।।39।।
प्रलंयकारी आंधी उठकर, फैल रही हो चारों ओर।
उठे फुलिंगे अंगारों की, वायु का भी होवे जोर।।
भुवनत्रय का भक्षण करले, आग सामने आती है।
प्रभू नाम के मंत्र नीर से, क्षण भर में बुझ जाती है।।40।।
क्रोधित कोकिल कण्ठ के जैसा, फण फैलाए काला नाग।
लाल नेत्र कर दौड़ रहा हो, मुख से निकल रहा हो झाग।।
ऐसे नाग के सिर पर चढ़कर, भी आगे बढ़ जाता है।
नाम जाप करने वाले का, नाग न कुछ कर पाता है।।41।।
जहाँ अश्व गज गर्वित होकर, गरज रहे हों चारों ओर।
बलशाली राजा की सेना, चीत्कार करती हो घोर।।

शक्तिहीन नर वहाँ अकेला, जपने वाला प्रभु का नाम।
बलशाली सेना को भी वह, नष्ट करे क्षण में अविराम।।42।।
बर्छी भालों से आहत गज, तन से बहे रक्त की धार।
योद्धा लड़ने को तत्पर है, लहू की सरिता करके पार।।
समरांगण में भक्त आपका, शत्रु सैन्य से पाए ना हार।
आश्रय पाये जो तव पद का, पाए विजय श्री उपहार।।43।।
लहरें क्षोभित हों सिन्धू की, शिखर से जाकर टकराएँ।
नक्र चक्र घड़ियाल भयंकर, बड़वानल भी जल जाएँ।।
सागर में तूफान विकट हो, फँसा हुआ जिसमें जलयान।
छुटकारा पा जाए क्षण में, करे आपका जो भी ध्यान।।44।।
भीषण रोगों से पीड़ित हो, और जलोदर का हो भार।
जीवन की आशा तज दी हो, भय से आकुल होय अपार।।
तव पद पंकज की रज पाकर, तन की मिट जाए सब पीर।
कामदेव के जैसा सुन्दर, भक्त आपका पाए शरीर।।45।।
पग से सिर तक जंजीरों से, जकड़ी हुई है जिसकी देह।
छिले हुए घुटने जंघाएँ, पीड़ाकारी निःसन्देह।।
ऐसे दुस्तर बन्दीजन भी, करके प्रभूनाम का जाप।
कट जाते हैं बन्धन सारे, उनके क्षण में अपने आप।।46।।
सिंह गजेन्द्र नाग रणस्थल, दावानल हो रोग अपार।
सिंधू भय अतिभीषण दुख हो, क्षण भर में पा जाए पार।।
गुण स्तवन वन्दन करता है, विश्वेश्वर का जो धीमान।
भय भी भय से आकुल होकर, करता है उसका सम्मान।।47।।
गुण उपवन से प्रभू आपके, भाँति-भाँति वर्णों के फूल।
चुनकर लाए भक्ति माल को, गूँथे हैं रुचि के अनुकूल।।
भव्य जीव जो सुमनावलि से, अपना कण्ठ सजाते हैं।
'मानतुंग' सम गुण के सागर, 'विशद' मुक्ति पद पाते हैं।।48।।

***

पंच परमेष्ठी की आरती *(तर्ज-पत्थर के पारस प्यारे...)*

परमेष्ठी हैं पंच हमारे, सारे जग से न्यारे।
सबकी उतारे हम आरती, ओ भैय्या ! हम सब उतारें मंगल आरती....
कर्म घातिया नाश किये हैं, केवल ज्ञान जगाए।
दोष अठारह रहे न कोई, प्रभु अर्हत् कहलाए।।
प्रभु के द्वारे हम आये, भक्ति से शीश झुकाए।। हम सब...
अष्ट कर्म का नाश किया है, अष्ट गुणों को पाए।
अजर-अमर अक्षय पद धारी, सिद्ध प्रभु कहलाए।।
शिवपुर को जाने वाले, मुक्ति को पाने वाले।। हम सब...
पंचाचार का पालन करते, शिष्यों से करवाते।
शिक्षा दीक्षा देने वाले, जैनाचार्य कहलाते।।
भक्ति हम उनकी करते, चरणों में मस्तक धरते।। हम सब...
रत्नत्रय के धारी मुनिवर, पढ़ते और पढ़ाते।
मोक्ष मार्ग पर उपाध्यायजी, नित प्रति कदम बढ़ाते।।
मूल गुण पाने वाले, ज्ञान बरसाने वाले।। हम सब...
विषय वासना हीन रहे जो, ज्ञान ध्यान तप करते।
'विशद' साधना करने वाले, कर्म कालिमा हरते।।
कर्मों को हरने वाले, मुक्ति को वरने वाले।। हम सब...

मौजमाबाद के अतिशयकारी 1008 श्री आदिनाथ भगवान की आरती

ॐ जय आदिनाथ स्वामी, जय आदिनाथ स्वामी।
मौजमाबाद में आप विराजे-2, हे अन्तर्यामी।। ॐ जय...।। टेक..।।
नगर अयोध्या जन्म लिए तुम, जग जन हितकारी, स्वामी जग जन हितकारी।
नाभिराय मरूदेवी के सुत-2, हो मंगलकारी।। ॐ जय...।।1।।
षट् कर्मों की शिक्षा, पावन आप दिए, स्वामी पावन आप दिए।
तन-मन-धन के दुखियों-2, का उपकार किए।। ॐ जय...।।2।।
नीलांजना का मरण देखकर, प्रभु वैराग्य लिया-स्वामी प्रभु वैराग्य लिया।
राज्य पाट परिवार स्वजन को-2, तुमने त्याग दिया।। ॐ जय...।।3।।
कर्म घातिया नाशी प्रभु जी, हुए विशद ज्ञानी-स्वामी हुए विशद ज्ञानी।
दिव्य ध्वनि श्री जिन की-2, बन गई जिनवाणी।। ॐ जय...।।4।।
प्रभू आपने जग में, अतिशय दिखलाए-स्वामी अतिशय दिखलाए।
'विशद' आपके दर्शन-2, करने हम आए।। ॐ जय...।।5।।
ॐ जय आदिनाथ स्वामी, जय आदिनाथ स्वामी।
मौजमाबाद में आप विराजे-2, हे अन्तर्यामी।। ॐ जय...।। टेक..।।

मौजमाबाद के मूलनायक 1008 श्री अजितनाथ भगवान की आरती

ॐ जय अजितनाथ स्वामी, प्रभु अजितनाथ स्वामी।
आरति करके हम भी-2, बनें मोक्षगामी।। ॐ जय.. ।। टेक।।
माघ सुदी दशमी को, तुमने जन्म लिया-प्रभु तमने जन्म लिया।
मात विजयसेना जितशत्रु-2, को भी धन्य किया।। ॐ जय..।।1।।
नगर अयोध्या जन्मे, गज लक्षणधारी-स्वामी गज लक्षणधारी।
आयू लाख बहत्तर पूरब-2, पाये मनहारी।। ॐ जय..।।2।।
साढ़े चार सौ धनुष प्रभु का, तन ऊँचा गाया-स्वामी तन ऊँचा गाया।
माघ सुदी दशमी को प्रभु ने-2, उत्तम तप पाया।। ॐ जय..।।3।।
पौष सुदी दशमी को, 'विशद' ज्ञान पाए-प्रभु विशद ज्ञान पाए।
इन्द्र सभी आकर के-2, चरणों सिर नाए।। ॐ जय..।।4।।
चैत्र सुदी पाँचे को, शिव पदवी पाए-प्रभु शिव पदवी पाए।
गिरि सम्मेद शिखर को-2, यह जग सिर नाए।। ॐ जय..।।5।।
मौजमाबाद में प्रभु जी, अतिशय दिखलाए, प्रभु अतिशय दिखलाए।
अतः आपके दर पे-2, हम दौड़े आए।। ॐ जय...।।6।।
ॐ जय अजितनाथ स्वामी, प्रभु अजितनाथ स्वामी।
आरति करके हम भी-2, बने मोक्षगामी।। ॐ जय.. ।। टेक।।

श्री नेमिनाथ भगवान की आरती

(तर्ज-शांति अपरम्पार है....)

नेमिनाथ दरबार है, प्रभु की जय जयकार है।
आरति करने आये स्वामी, आज तुम्हारे द्वार हैं।। टेक।।
सौरीपुर में जन्म लिए प्रभु, घर-घर मंगल छाया जी।
इन्द्र सुरेन्द्र महेन्द्र सभी ने, प्रभु का न्हवन कराया जी।। नेमिनाथ... ।।1।।
नेमिकुंवर जी ब्याह रचाने, जूनागढ़ को आये जी।
पशुओं का आक्रन्दन लखकर, उनको तुरत छुड़ाए जी।। नेमिनाथ... ।।2।।
मन में तब वैराग्य समाया, देख दशा संसार की।
राह पकड़ ली तभी प्रभु ने, महाशैल गिरनार की।। नेमिनाथ... ।।3।।
पञ्च मुष्टि से केशलुंच कर, भेष दिगम्बर धारे जी।
कठिन तपस्या के आगे सब, कर्म शत्रु भी हारे जी।। नेमिनाथ... ।।4।।
केवलज्ञान जगाकर प्रभु ने, जग को राह दिखाई जी।
भवसागर का पार करूँ यह, 'विशद' भावना भाई जी।। नेमिनाथ... ।।5।।

श्री पार्श्वनाथ भगवान की आरती

प्रभु पारसनाथ भगवान, आज थारी आरती उतारूँ।
आरती उतारूँ थारी मूरत निहारूँ-2, प्रभु कर दो भव से पार।। आज.....।। टेक।।
अश्वसेन के राजदुलारे-2, वामा की आँखों के तारे-2 जन्मे हैं काशीराज-आज थारी...
बाल ब्रह्मचारी हितकारी-2, विघ्नविनाशक मंगलकारी-2 जैन धर्म के ताज-आज थारी...
नाग युगल को मंत्र सुनाया-2, देवगति को क्षण में पाया-2 किया प्रभू उपकार-आज थारी...
दीन बन्धु हे ! केवलज्ञानी-2, भव दुखहर्त्ता शिवसुखदानी-2 करो जगत उद्धार-आज थारी...
'विशद' आरती लेकर आये-2, भक्ति भाव से शीश झुकाये-2 जन-जन के सुखकार-आज थारी...
खड्गासन प्रतिमा मनहारी-2, मौजमाबाद में मंगलकारी-2 सोहें अतिशयकार-आज थारी...

नन्दीश्वर की आरती

(तर्ज : शांति अपरम्पार है ..)

नन्दीश्वर अविराम है, बावन शुभ जिन धाम हैं,
जिन चरणों की आरति करके, करते विशद प्रणाम हैं।
प्रथम आरती अंजनगिरि की, चतुर्दिशा में सोहें जी-2
जिन चैत्यालय चैत्य हैं उन पर, सबके मन को मोहें जी-2 नन्दीश्वर....
अंजनगिरि के चतुर्दिशा में, बावड़िया शुभ जानो जी-2
स्वच्छ नीर से भरी हुई हैं, अतिशयकारी मानो जी। नन्दीश्वर....
मध्य बावड़ी के हैं दधिमुख, अतिशय मंगलकारी जी-2
उनके ऊपर जिन चैत्यालय, प्रतिमाएँ मनहारी जी-2 नन्दीश्वर....
बावड़ियों के बाह्य कोण पर, रतिकर विस्यमकारी जी-2
उनके ऊपर जिन चैत्यालय, प्रतिमाएँ मनहारी जी-2 नन्दीश्वर....
शाश्वत जिनगृह जिनबिम्बों की, आरती करने आये हैं-2
'विशद' अर्चना के परोक्ष ही, हमने भाव बनाएँ हैं। नन्दीश्वर....

आरती-गुरुवर विशदसागर जी की (तर्ज - ॐ जय...)

ॐ जय-जय गुरुदेवा, स्वामी जय-जय गुरुदेवा।
आरति करत तुम्हारी, मिले मुक्ति मेवा।। ॐ जय-जय गुरुदेवा..
पूज्य गुरु श्री विशद सागर जी, आप बड़े ज्ञानी, स्वामी आप बड़े ज्ञानी।
उपदेशामृत देकर-2, कहते जिनवाणी।। ॐ जय-जय गुरुदेवा..।।
धन्य-धन्य वे मात-पिताजी, परम भाग्यशाली, स्वामी परम भाग्यशाली।
ऐसे सुत को जन्मा-2, जो जन हितकारी।। ॐ जय-जय गुरुदेवा..।।
नग्न दिगम्बर भेष धारकर, बन गये उपकारी, स्वामी बन गये उपकारी।

पिच्छी कमण्डल सहित आपकी-2, मूरत अति प्यारी।। ॐ जय-जय गुरुदेवा..।।
भक्ति भाव से करें आरती, सब मिल नर-नारी, स्वामी सब मिल नर-नारी।
आया मैं भी शरण तुम्हारी-2, उद्धार करो स्वामी।। ॐ जय-जय गुरुदेवा..।।
विशाल आरती करे आपकी, बने आत्म ज्ञानी, स्वामी बने आत्म ज्ञानी।
संयम पूर्वक करे निर्जरा-2, बने मोक्षगामी।। ॐ जय-जय गुरुदेवा..।।

मानस्तम्भ की आरती *(तर्ज - इह विधि मंगल आरति...)*

मानस्तम्भ की आरति कीजे, अपना जन्म सफल कर लीजे।। टेक।।
जिनवर चारों दिश में सोहें, भवि जीवों के मन को मोहे।। मानस्तम्भ..
पूर्व दिशा में जिनवर गाए, वीतरागता जो दर्शाए।। मानस्तम्भ..
दक्षिण दिश की प्रतिमा प्यारी, देखत लागे अतिमनहारी।। मानस्तम्भ..
पश्चिम दिश के श्री जिन स्वामी, गाए पावन अन्तर्यामी।। मानस्तम्भ..
उत्तर के जिनबिम्ब निराले, भव्यों का मन हरने वाले।। मानस्तम्भ..
मानस्तम्भ का दर्शन पाए, क्षण में मान गलित हो जाए।। मानस्तम्भ..
'विशद' भावना हम ये भाएँ, बार-बार जिन दर्शनपाएँ।। मानस्तम्भ..
दीप जलाकर के यह लाए, आरति के सौभाग्य जगाए।। मानस्तम्भ..

क्षेत्रपाल की आरती

आज करे हम क्षेत्रपाल की, आरति मंगलकारी-2 ।
घृत के दीप जलाकर लाए-2, बाबा तेरे द्वार।।
हो बाबा, हम सब उतारें तेरी आरती।। टेक।। हो बाबा.....
छियानवे क्षेत्रपाल की फैली, इस जग में प्रभुताई-2
विजय वीर अपराजित भैरव-2, मणिभद्रादिक भाई
हो बाबा, हम सब उतारे तेरी आरती।।1।। हो बाबा.....
लाल लंगोट गले में कंठी, लाल दुपट्टा धारी-2
सिर पर मुकुट शोभता पावन-2, कर त्रिशूल मनहारी।।
हो बाबा, हम सब उतारे तेरी आरती।।2।। हो बाबा.....
कानों कुण्डल पैर पावटा, माथे तिलक लगाए-2
बाजूबंद पान है मुख में-2, कूकर वाहन पाए।।
हो बाबा, हम सब उतारे तेरी आरती।।3।। हो बाबा.....
अंगद आदि उपद्रव कीन्हें, तब लंकेश्वर ध्याए-2
सर्व उपद्रव दूर किया तब-2, अतिशय शांती पाए।।
हो बाबा, हम सब उतारे तेरी आरती।।4।। हो बाबा.....

सम्यक्त्वी तुम भक्त जनों के, सारे संकट हरते-2
पुत्रादिक धन सम्पत्ति की-2, वाञ्छा पूरी करते ।।
हो बाबा, हम सब उतारे तेरी आरती ।।5।। हो बाबा.....

पदमावती माता की आरती

(तर्ज : भक्ति बेकरार है..)

माता का दरबार है, अतिशय मंगलकार है ।
आज यहाँ पद्मावति माँ की, हो रही जय-जयकार है ।। टेक ।।
माँ पद्मावति पार्श्वनाथ को, मस्तक ऊपर धारे जी-2 ।
इन्द्र नरेन्द्र सुरेन्द्र खड़े हैं, माँ पद्मा के द्वारे जी-2 ।।
माता का दरबार है... ।।1।।
जो भी माँ की शरण में आए, वह सौभाग्य जगाए जी-2 ।
पुत्र-पौत्र धन सम्पत्ति माँ के, दर पे आके पाए जी-2 ।।
माता का दरबार है... ।।2।।
शाकिन-डाकिन भूत भवानी, की बाधा हट जाए जी-2 ।
वात-पित्त कफ रोगादिक से, प्राणी मुक्ती पाए जी-2 ।।
माता का दरबार है... ।।3।।
त्रय नेत्री हे पद्मा देवी, तिलक भाल पे सोहे जी-2 ।
मुख की कान्ती अनुपम माँ की, भविजन का मन मोहे जी-2 ।।
माता का दरबार है... ।।4।।
दैत्य कमठ का मान गलाया, सुयश विश्व में छाया जी-2 ।
आदि दिगम्बर धर्म बताकर, जिनमत को फैलाया जी-2 ।।
माता का दरबार है... ।।5।।
कुक्कुट सर्प वाहिनी माँ के, सहस्त्र नाम बतलाए जी-2 ।
मथुरा में जिन दत्तराय जी, रक्षा तुमसे पाए जी-2 ।।
माता का दरबार है... ।।6।।
दीप धूप फल पुष्प हार ले, आरति करने आए जी-2 ।
दर्शन करके विशद आपके, मनवांछित फल पाए जी-2 ।।
माता का दरबार है... ।।7।।

भजन

आँखें बंद करूँ या खोलूँ, बाबा दर्शन दे देना।
दर्शन दे देना ओ बाबा, दर्शन दे देना ।।

मैं ना चीज हूँ बन्दा तेरा, तू सबका दातार है।
तेरे हाथ में सारी दुनियाँ, मेरे हाथ में क्या
तुझसे देखूँ बाबा ऐसा, दर्पण दे देना ।। ओ बाबा...
मेरा ध्यान बड़े बाबा, मेरे मन में आते रहियो।
हर इक सांस के पीछे, अपनी झलक दिखाते रहियो ।।
करूँ साधना ऐसी तेरी, साधन दे देना ।। ओ बाबा...
तेरे दर पे भक्त भिखारी, जो भी जैसा आया।
श्रद्धा भक्ति का फल उसने, दर पे तेरे पाया ।।
सुख-शांति आनन्द 'विशद', हे भगवन् दे देना ।। ओ बाबा...
भक्त बने हम प्रभु आपके, दर पर चलके आए।
श्रद्धा के यह पुष्प संजोकर, द्वार आपके लाए ।।
जिस पद को तुमने पाया, वह अर्हन् दे देना ।। ओ बाबा...

भजन

मौजमाबाद के बाबा के, दर्शन करने आये हैं।
बाबा दो आशीष हमें हम, तुम्हें मनाने आये हैं ।। टेक ।।
जो भी द्वार आपके आते, उनके दुःख मिटाते हो।
सुख-शांती सौभाग्य भव्य को, क्षण में आप दिलाते हो ।।
सारे जग के प्राणी जग में, बाबा के गुण गाये हैं ।।
बाबा दो आशीष... ।।1।।
मौजमाबाद वाले बाबा ने, कई चमत्कार दिखलाए हैं।
सुनकर महिमा आज यहाँ पर, हम भी दौड़े आए हैं ।।
दर्श आपका हमने पाया, यह सौभाग्य हमारे हैं ।।
बाबा दो आशीष... ।।2।।
दर्श आपका हमने पाया, यह सौभाग्य हमारे हैं।
अन्जन जैसे पापी जग के, नाथ आपने तारे हैं ।।
हम भक्त आपके बनकर के, चरणों सिरनाते हैं।
बाबा दो आशीष... ।।3।।
जो भी तुमको मन से ध्याता, उसके कष्ट मिटाते हैं।
रोग-शोक दुखिया जो प्राणी, उनको अभय दिलाते हो ।।
भक्त अनेकों आज तुम्हारे, दर्शन करने आये हैं ।।
बाबा दो आशीष... ।।4।।

***